ज्ञान विचार

अज्ञान ही समस्त बुराइयों की जड़ है अज्ञानी रहने से अच्छा है जन्म ही ना ले।

PKL NO.KKR/184/2022-24

हिन्दी पाक्षिक राष्ट्रीय समाचार पत्र

सच्ची व स्टीक खबर, आप तक

सम्पादक : जरनैल सिंह

छायाकार : राजरानी

गजब हरियाणा

Contact : 91382-03233

समस्त भारत में एक साथ प्रसारित

HAR/HIN/2018/77311

WWW.GAJABHARYANA.COM ✹ 16 अक्तुबर 2023 वर्ष : 6, अंक : 14 पृष्ट : 8 मूल्य: 7/- सालाना 150/- रुपये ✹ email. gajabharyananews@gmail.com

प्रेरणास्रोत: डॉ. कृपा राम पुनिया IAS(Retd.), पूर्व उद्योग मंत्री हरियाणा सरकार

मार्गदर्शक: एन.आर फुले, डिप्टी कमिश्नर (जीएसटी)

मार्गदर्शक: डॉ. राज रूप फुलिया, IAS (Retd), पूर्व अतिरिक्त मुख्य सचिव, हरियाणा सरकार तथा वाइस चांसलर, गुरु जम्भेश्वर यूनिवर्सिटी हिसार एवं चौधरी देवीलाल यूनिवर्सिटी, सिरसा

विराट कोहली बने दुनिया के नंबर वन चेज़र

भारत/ऑस्ट्रेलिया वर्ल्ड कप मैच के बाद विराट कोहली, दुनिया के नंबर 1 चेज़र बन गए हैं। कोहली ने सचिन तेंदुलकर के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ते हुए वनडे मैच की 92 पारियों में 89 की औसत से 557 रन बनाए हैं। जबकि, सचिन ने 124 पारियों में 55 की औसत से 5490 रन बनाए थे।

संदीप गर्ग ने गांव भगवानपुर में महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए खोला सिलाई सेंटर

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए लाडवा हल्के में खोले जा रहे सिलाई सेन्टर : संदीप गर्ग

गजब हरियाणा न्यूज/राजेश

बाबैन । लाडवा हल्के के नेता एवं समाजसेवी संदीप गर्ग द्वारा गांव भगवानपुर में महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सिलाई सेंटर का शुभारंभ किया गया। ग्रामीणों व महिलाओं द्वारा नेता संदीप गर्ग का गांव में पहुंचने पर स्वागत भी किया गया। नेता संदीप गर्ग ने कहा कि आज लड़कियां व महिलाएं किसी भी क्षेत्र में पुरुषों व युवाओं से पीछे नहीं है, आगे ही है। इसलिए उन्होंने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए हल्के के कई गांवो में सिलाई कढ़ाई प्रशिक्षण केन्द्र खोले हैं ताकि लाडवा हल्के की हर महिला अपने आप कार्य कर आत्मनिर्भर बन सके और अपने परिवार का पालन पोषण करने में सक्षम बन सके। उसी कड़ी में गांव भगवानपुर की महिलाओं के लिए सिलाई सेंटर खोला गया है। जिसके कारण यहां की महिलाएं सिलाई सीख कर अपने घर पर लोगों के कपड़े बनाकर अपना रोजगार तो कर ही सकेगी। इसके साथ-साथ वह आत्मनिर्भर भी बनेंगे। वहीं ग्रामीण राहुल टंडन, प्रीतम नंबरदार, सुमित, सलिन्द्र सिंह आदि ने कहा कि समाजसेवी संदीप गर्ग द्वारा समाजसेवा के जो नेक कार्य किये जा रहे हैं उनकी जितनी प्रशंसा की जाए उतनी कम है।

उन्होंने कहा कि जिस उद्देश्य से समाजसेवी संदीप गर्ग लाडवा हल्के की जनता की सेवा करने में लगे हुए हैं उससे यह साफ हो रहा है कि इन्हें किसी भी बात का प्रलोभन नहीं है, यह मात्र जनता की सेवा करने के लिए राजनीति में आए हैं और 2024 के विधानसभा चुनाव में लाडवा हल्के से भारी मतों से जीताकर इन्हें विधानसभा में भेजने का काम करेंगे। मौके पर सरपंच लक्ष्मण दास, महात्मा गुरपाल दास, सोनिया देवी, हिमांशी, रीतू, दीपा रानी, रेखा रानी, मनीषा रानी, मनजीत कौर, उषा रानी, बेबी देवी आदि मौजूद थे।

नगर परिषद व नगर पालिका क्षेत्र में रहने वाले रेहड़ी व फड़ी विक्रेता बनवा सकते है अपना लाइसेंस: पंकज

समय की ताकत/जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र, जिला नगर आयुक्त पंकज सेतिया ने कहा कि जिले के सभी रेहड़ी, फड़ी, फेरी, पटरी विक्रेताओं से अपील की जाती है कि जो भी शहरी/ग्रामीण विक्रेता नगर परिषद व नगर पालिका के अंतर्गत कार्य कर रहे है, उनका नगर परिषद व नगर पालिका की तरफ से लाइसेंस बनाया जा रहा है। इस लाइसेंस को बनाने उपरांत सभी विक्रेताओं को पीएम स्वनिधि स्कीम के साथ जोड़ा जाएगा ताकि भविष्य में इन सभी को सरकारी योजनाओं का लाभ दिया जा सके।

डीएमसी पंकज सेतिया ने कहा कि स्कीम का लाभ लेने हेतु आधार कार्ड, बैंक खाता पास की कापी, आधार कार्ड से लिंक मोबाइल नंबर साथ लेकर आना होगा। इस कार्य के लिए जिला नगर आयुक्त कार्यालय में कर्मचारी नवदीप कौर, मुकेश, रानी शर्मा, अनुराग

शर्मा से संपर्क कर सकते है। लाइसेंस बनने के बाद स्कीम के तहत योजना का लाभ उठाया जा सकता है। इस स्कीम में 10 हजार से लेकर 50 हजार रुपए तक का ऋण बैंक के माध्यम से उपलब्ध करवाया जाता है, जिसमें सरकार द्वारा 9 फीसदी वार्षिक ब्याज का लाभ भी ले सकते है। नगर परिषद थानेसर व सभी नगर पालिकाओं के लाभार्थी जिला नगर आयुक्त कार्यालय न्यू लघु सचिवालय तृतीय मंजिल कमरा नंबर 304 में आकर अपना लाइसेंस बनवा सकते है।

हरियाणा मंत्रिमंडल ने हरियाणा डिजिटल मीडिया विज्ञापन नीति, 2023 को दी मंजूरी

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

चंडीगढ, मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल की अध्यक्षता में आज आयोजित हरियाणा मंत्रिमंडल की बैठक ने हरियाणा डिजिटल मीडिया विज्ञापन नीति, 2023 को मंजूरी दी गई।

यह नीति सरकारी विकासात्मक नीतियों और कार्यक्रमों को उजागर करने के उद्देश्य से सोशल मीडिया समाचार चैनलों और सोशल मीडिया इन्फ्लूएंसर्स को शामिल करने के उद्देश्य से लाई जा रही है। वर्ष 2007 और 2020 की मौजूदा नीति केवल प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और वेबसाइटों तक ही सीमित थी।

सोशल मीडिया समाचार चैनल और सोशल मीडिया इन्फ्लूएंसर्स को शामिल करने का निर्णय ट्विटर, फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब आदि जैसे सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए लिया गया है। वर्तमान दौर में इंटरनेट-सक्षम उपकरणों और सोशल मीडिया प्लेटफार्मों को व्यापक रूप से अपनाने के साथ, डिजिटल मीडिया लोगों के दैनिक जीवन में सर्वव्यापी उपस्थिति बन गया है।

सोशल मीडिया समाचार चैनलों, वेबसाइटों और प्रतिष्ठित सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर विज्ञापन जारी करने का प्राथमिक उद्देश्य सरकार की कल्याणकारी नीतियों एवं योजनाओं का व्यापक संभव कवरेज प्राप्त करना है।

नीति के तहत, सोशल मीडिया समाचार चैनलों को उनके ग्राहकों, अनुयायियों और सोशल मीडिया अकाउंट पर पोस्ट की संख्या को ध्यान में रखते हुए पैनल में शामिल करने के लिए पांच श्रेणियां बनाई गई हैं। डीआईपीआर हरियाणा द्वारा इन श्रेणियों के अनुसार सोशल मीडिया समाचार चैनलों को सूचीबद्ध किया जाएगा।

नीति के तहत, आवश्यकता पड़ने पर पैनल सलाहकार समिति प्रत्येक श्रेणी, विज्ञापन प्रारूप और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के लिए समय-समय पर दरें तय, बढ़ाएगी या संशोधित करेगी। जब भी वह उचित समझे, वह सोशल मीडिया समाचार चैनलों से अन्य प्रासंगिक विज्ञापन प्रारूपों के लिए दरें साझा करने के लिए कह सकता है। एक बार विज्ञापन देने के बाद सोशल मीडिया न्यूज चैनलों को विज्ञापन की तारीख से एक महीने तक विज्ञापन रखना होगा। प्रत्येक श्रेणी के तहत पैनल सलाहकार समिति (धारा 7) द्वारा निर्धारित न्यूनतम आधार दर उस श्रेणी में आने वाले आवेदक सोशल मीडिया चैनल को प्रदान की जाएगी। यदि विज्ञापित/प्रायोजित सोशल मीडिया सामग्री 5 प्रतिशत ग्राहका/ अनुयायियों तक पहुंचने में विफल रहती है तो विज्ञापन दरों में प्रासंगिक कटौती की जाएगी। प्रायोजित सामग्री सरकारी योजनाओं, सेवाओं, उपलब्धियों और अन्य नीतिगत पहलों पर आधारित होगी।

हॉकी खिलाड़ी अमित रोहिदास को 1.5 करोड़ देंगे नवीन पटनायक

मुझे अपने देश का प्रतिनिधित्व करने का मौका मिलने पर हुई गर्व की अनुभूति: अमित रोहिदास

गजब हरियाणा न्यूज

भुवनेश्वर, ओडिशा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने एशियाई खेलों में हॉकी में स्वर्ण पदक जीतने वाली भारतीय टीम के सदस्य अमित रोहिदास को 1.5 करोड़ रुपये का नकद पुरस्कार देने की घोषणा की है। मुख्यमंत्री ने ओडिशा के सुंदरगढ़ निवासी डिफेंडर-ड्रैगफ्लिकर अमित रोहिदास को बधाई देते हुए उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन की सराहना की और उन्हें न केवल ओडिशा बल्कि पूरे देश के युवाओं के लिए प्रेरणा बताया। उन्होंने कहा, %%अमित रोहिदास की उल्लेखनीय उपलब्धियां दृढ़ता और उत्कृष्टता की भावना का उदाहरण हैं। वह हमारे राज्य और उसके बाहर के महत्वाकांक्षी एथलीटों के लिए आशा और गर्व का प्रतीक बन गए हैं। उनकी सफलता की कहानी महानता हासिल करने का प्रयास करने वाले प्रत्येक व्यक्ति से मेल खाती है। हमें उनकी उपलब्धियों पर बेहद गर्व है। अमित रोहिदास ने टोक्यो ओलंपिक 2020 में कांस्य पदक अर्जित किया था। अमित ने राउरकेला के शानदार स्पोर्ट्स हॉस्टल में अपने असाधारण कौशल को निखारा। मौजूदा एशियाई खेलों में कोरिया के खिलाफ सेमीफाइनल में उनके निर्णायक गोल ने भारतीय टीम को फाइनल और स्वर्ण पदक की ओर अग्रसर किया।

केंद्रीय शिक्षा, कौशल विकास उद्यमिता मंत्री ने किया अमित रोहिदास की सम्मानित

केन्द्रीय शिक्षा, कौशल विकास व उद्यमिता मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने 10 अक्टूबर को नई दिल्ली स्थित अपने सरकारी आवास में एशियाई खेलो में हाकी में स्वर्ण पदक विजेता भारतीय टीम के सदस्य अमित रोहिदास से भेंट कर उन्हें बधाई दी।

अमित रोहिदास का हॉकी टीम का सफर

अंतर्राष्ट्रीय कैप भारतीय पुरुष हॉकी टीम के डिफेंडर अमित रोहिदास ने भारत के लिए अपनी 150वीं अंतर्राष्ट्रीय कैप अर्जित की। ओडिशा के सुंदरगढ़ जिले के रहने वाले अनुभवी डिफेंडर ने प्रतिष्ठित मेयर राधाकृष्णन स्टेडियम में चीन के खिलाफ हीरो एशियन चैंपियंस ट्रॉफी चेन्नई 2023 के भारत के शुरुआती गेम के दौरान यह उपलब्धि हासिल की। रोहिदास जो भारतीय रक्षा लाइन-अप में पहले रशर की महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, ने भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी के लिए प्रभावशाली प्रदर्शन के बाद मलेशिया के इपोह में सुल्तान अजलान शाह कप 2013 में भारतीय सीनियर पुरुष हॉकी टीम में पदार्पण किया। 2011 सुल्तान ऑफ जोहोर कप और 2012 सुल्तान ऑफ जोहोर कप में टीम। 30 वर्षीय रोहिदास उस भारतीय पुरुष हॉकी टीम का हिस्सा थे जिसने 2013 एशिया कप में रजत पदक जीता था। राउरकेला के पानपोश स्पोर्ट्स हॉस्टल में

अपने हॉकी कौशल को निखारने वाले रोहिदास ने 2013 में नई दिल्ली में आयोजित एफआईएच जूनियर पुरुष हॉकी विश्व कप में भारत का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने 2014 हॉकी पुरुष विश्व लीग फाइनल 2014 में भी खेला। रोहिदास ने 2017 में हॉकी इंडिया लीग में एक ठोस प्रदर्शन करने के बाद राष्ट्रीय टीम में वापसी की और भारतीय टीम में मुख्य आधार बन गए। बर्मिंघम 2022 राष्ट्रमंडल खेलों में रजत पदक जीतें रोहिदास ने एफआईएच ओडिशा हॉकी पुरुष विश्व कप भुवनेश्वर 2018 में भी भारत का प्रतिनिधित्व किया और टोक्यो ओलंपिक 2020 में भारत की कांस्य पदक जीतने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने एफआईएच हॉकी प्रो लीग 2021/22 में भारत को तीसरा स्थान हासिल करने में भी मदद की। और बर्मिंघम 2022 राष्ट्रमंडल खेलों में रजत पदक जीतें। टोक्यो में उनके ऐतिहासिक प्रदर्शन के लिए उन्हें 2021 में अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। रोहिदास ने एफआईएच ओडिशा हॉकी पुरुष विश्व कप 2023 भुवनेश्वर-राउरकेला में उप कप्तान के रूप में भारत का प्रतिनिधित्व किया और एफआईएच हॉकी प्रो लीग 2022/23 में चौथे स्थान पर रहने वाली भारतीय पुरुष हॉकी टीम का भी हिस्सा थे।

मुझे अपने देश का प्रतिनिधित्व करने का मौका देने पर हुई हमेशा गर्व की अनुभूति : अमित रोहिदास

जब भी मुझे अपने देश का प्रतिनिधित्व करने का मौका दिया गया है तो मुझे हमेशा गर्व की अनुभूति हुई है। मैं सहयोगी स्टाफ, कोच, मेरे साथियों और हॉकी इंडिया का मुझ पर विश्वास करने और मुझे खुद को अभिव्यक्त करने की अनुमति देने के लिए आभारी हूं। मैदान पर। उनके समर्थन के कारण, मैं भारत के लिए अपनी 150वीं अंतर्राष्ट्रीय कैप प्राप्त करने के लिए काफी भाग्यशाली रहा हूं। अमित रोहिदास ने कहा, मैं अपना सर्वश्रेष्ठ देना जारी रखूंगा और आने वाले कई वर्षों तक भारत का प्रतिनिधित्व करने की उम्मीद करता हूं।

नशे के खिलाफ खड़ा हो आंदोलन

अभी कुछ दिन पहले ही देश में किए गए एक सर्वे में कहा गया कि युवाओं में सिगरेट पीने की लत में कमी आई है और सिगरेट की बिक्री कम हुई है। मगर ताजा सर्वे में सिगरेट को लेकर बढ़ती लत ने चिंता बढ़ा दी है। नए रिसर्च में पता चला है कि दुनिया में करीब 110 करोड़ लोग स्मोकिंग करते हैं और ये बेहद चिंता की बात है। रिसर्च से पता चला है कि 2022 में पूरे विश्व भर में करीब 80 लाख लोग सिगरेट पीने की वजह से मारे गए हैं लेकिन ये आंकड़ा बढ़ता ही जा रहा है। खासकर दुनिया की जवान आबादी तेजी से स्मोकिंग के दलदल में फंसती जा रही है। रिसर्च में पता चला है कि 25 साल की उम्र तक आते आते युवा सिगरेट पीना शुरू कर देते हैं और विश्व की बहुत बड़ी युवाओं की आबादी ने सिगरेट पीना शुरू कर दिया है। इस स्टडी के दौरान पाया गया है कि पिछले 30 सालों में दुनिया के 20 देशों में पुरुष आबादी ने काफी तेजी से सिगरेट पीना शुरू कर दिया है तो दुनिया के 12 देशों में महिला आबादी काफी तेजी से सिगरेट के लत में फंसी हैं।

स्टडी के मुताबिक चीन में सबसे खतरनाक स्तर पर स्मोकर्स मिले हैं। वहीं रिपोर्ट के मुताबिक एशियाई देशों में तीन में से एक शख्स सिगरेट पीता है। चीन के बाद सबसे ज्यादा स्मोकर्स भारत में पाए गए हैं। भारत के बाद इंडोनेशिया, रूस, अमेरिका, बांग्लादेश, जापान, तुर्की, वियतनाम और फिलिपिंस हैं। देखा जाए, तो तंबाकू की लत बहुत पुरानी है, लेकिन कुछ सालों पहले तक यह बुजुर्गों अथवा बड़ी उम्र के पुरुषों तक ही सीमित थी, मगर चिंताजनक तथ्य सामने आया है कि अब तंबाकू उम्र नहीं देख रही है और युवा भी उसके दुष्परिणामों को जानते हुए भी अनजान हैं। शोध में यह बात सामने आई कि तंबाकू का सेवन युवाओं के दिल का बड़ा दुश्मन बनता जा रहा है। तकरीबन 40 फीसदी युवाओं में हार्ट संबंधी परेशानियों का बड़ा कारण तंबाकू का सेवन ही बताया गया है। देश में हर साल करीब 30 लाख लोग हार्ट अटैक से पीड़ित होते हैं।

पश्चिमी देशों की तुलना में भारत के लोग 10 साल पहले दिल की बीमारियों से पीड़ित हो जाते हैं। पहले पश्चिमी देशों में भी हालत बदतर थे मगर बीमारियों की रोकथाम के उपायों तथा चिकित्सा सेवाओं को बेहतर कर हार्ट अटैक के मामलों में कमी लाने में सफलता पाई गई है। गौरतलब है तंबाकू सेवन से देशभर में 28 सौ लोगों की मौत रोज हो रही है। वहीं दुनिया में हर छह सेकंड में एक व्यक्ति की मौत तंबाकू से होती है। इसे विडंबना ही कहिए कि देश में हर साल कैंसर के 11 लाख नए मरीज पैदा हो रहे हैं। इसमें अकेले ढाई से तीन लाख मुंह और गले के कैंसर से पीड़ित होते हैं। एक शोध में यह बात सामने आई थी कि सिगरेट तथा बीड़ी में चार हजार तरह के कैमिकल होते हैं इनमें 60 कैमिकल ऐसे होते हैं जो कैंसर जैसी बीमारियों को बढ़ावा देते हैं। कहा तो यहां तक जाता है कि 2015 में भारत में 8.8 बिलियन सिगरेट बेची गई।

विश्व बैंक के मुताबिक, हर जगह सिगरेट का खुदरा मूल्य 65 फीसदी से 80 फीसदी के बीच है जबकि भारत में सिगरेट पर 38 फीसदी टैक्स लगाया गया है तथा बीड़ी के खुदरा मूल्य पर करीब नौ फीसदी तक का टैक्स है। दुनियाभर में तंबाकू के इन उत्पादों पर ज्यादा टैक्स होने के कारण इसके उपयोग में कमी देखी गई। चिंता की बात यह है कि सिगरेट जीवन के पांच मिनट कम कर करती है। यह बात हर कोई जानता है कि धूम्रपान और तंबाकू से कई तरह के कैंसर होते हैं, लेकिन यह बात भी सही है कि धूम्रपान आपके शरीर के हर अंग में कोई न कोई समस्या पैदा करता है। टीबी, डायबिटीज, हृदय रोग, गठिया, यौन अनिच्छा, बांझपन, मानसिक आघात, अंधेपन से जुड़ी समस्याएं, दांतों, मुंह के रोगों का कारण तंबाकू की भी लत है। भारत में 15 साल और उससे अधिक उम्र की करीब सात करोड़ महिलाएं तंबाकू चबाती हैं। कहा जाता है कि इसकी एक अहम वजह मेहनत करने वाले काम के दौरान भूख को दबाने की इच्छा है। एक अनुमान के अनुसार, हर साल पुरुषों में करीब 85 हजार मामले सामने आते हैं, जिसमें 90 फीसदी मामलों में किसी न किसी रूप में तंबाकू का इस्तेमाल है। तंबाकू सेवन का प्रभाव सिर्फ सेवन करने वाले तक सीमित नहीं होता।

> भारत में तंबाकू की तरफ तेजी से युवाओं का रुझान बढ़ता जा रहा है, जो देश और समाज के लिए घातक है। तंबाकू जैसे जानलेवा पदार्थों तक युवाओं की पहुंच रोकने के लिए सरकार अपने स्तर पर भरसक प्रयास कर रही है। समाज की भी जिम्मेदारी बनती है कि वह आगे आए। नशे के खिलाफ युवा आबादी को प्रेरित करने मुहिम चलाने की जरूरत है। एक दिवस मनाने से काम नहीं चलेगा।

वलेंटरी हेल्थ एसोसिएशन ऑफ इंडिया नामक संस्था की रिपोर्ट बताती है कि किसान, बीड़ी बनाने वाले मजदूर, तेंदूपत्ता तोड़ने वाले गरीब लोग अनजाने में ही बीमारियों से घिर जाते हैं। तंबाकू के पौधे को छूने से किसान तथा उनके परिवार लगातार निकोटिन के संपर्क में रहते हैं। तंबाकू उत्पाद बनाने वाले ज्यादातर मजदूर औरतें और बच्चे ही होते हैं जो तंबाकू के पत्तों से बनी धूल से भरे कारखानों में काम करने की वजह से गंभीर सांस की बीमारियों से ग्रसित हो जाते हैं। ज्यादातर लोग तंबाकू के पाउच, डिब्बे, सिगरेट के बड्स कहीं भी फेंक देते हैं, जिससे बड़ी मात्रा में धरती और भूजल प्रदूषित हो रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'मन की बात' में युवाओं से अपील की थी कि नशा समाज और अवाम दोनों के लिए एक अभिशाप है। हर अभिभावक का कर्तव्य है कि वे अपने बच्चों को संवारने के लिए उनकी गतिविधियों पर पूरी तरह से नजर रखें। बच्चों में किसी भी बदलाव को नजरअंदाज नहीं करें।

दिनों दिन तंबाकू का सेवन करने वाले युवाओं की संख्या बढ़ती जा रही है और उसका सबसे बड़ा कारण है अपने हम उम्र दोस्तों के बीच अपना प्रभाव बनाने की चाहत। कई बार इस आदत के शिकार लोगों का मानना होता है कि उनके पूर्वजों ने भी लंबा जीवन व्यतीत किया, जबकि वे सिगरेट के आदी थे। कुछ का मानना होता है कि समाज में अधिकांश लोग ऐसा करते हैं और फिर यही चलन भी है। जाहिर है ऐसी सोच लोगों को इन बुरी लतों को बनाए रखने के लिए भी प्रेरित करती है। भारत में लगभग हर शहर में दर्जनों नशामुक्ति एवं पुनर्वास केंद्र हैं, जहां हर तरह के मादक पदार्थों की लत से मुक्ति दिलाकर समाज में पीड़ितों को सम्मानजनक जिंदगी जीने के लायक बनाने का प्रयास किया जाता है। कई सप्ताह के इलाज के बाद पीड़ित लोग इस उम्मीद के साथ घर लौटते हैं कि यह लत उन्हें दोबारा नहीं लगेगी। एक रिसर्च के मुताबिक, अमेरिका में नशे की लत का इलाज जरूरतमंद लोगों में से 10.3 फीसदी को ही मिल पाता है। किर्गिस्तान शहर का एक डॉक्टर नशा छुड़ाने के लिए एक इंजेक्शन लगाता है, जिससे मरीज कई घंटों के लिए कोमा जैसी अवस्था में चला जाता है।

ऐसा कहा जाता है कि जब वे दोबारा जागते हैं तो नशे की लत छूट चुकी होती है। विशेषज्ञ इसे खतरनाक तकनीक बताते हैं। चीन में नशेड़ियों का जेल में इलाज होता है। अफगानिस्तान में खाने में पानी, रोटी एवं काली मिर्च दी जाती है। रियो वेजनेरो में आध्यात्मिक तरीकों से लत छुड़ाई जाती है। केंद्र के बाहर नशेड़ी सुबह ही प्रार्थना के लिए इकट्ठा होते हैं। चर्च के पास ही रहने की व्यवस्था भी रहती है। नशे की लत से छुटकारा पाने के इच्छुक लोग बौद्ध भिक्षुओं के बीच रहते हैं। वैसे, इस तरह के उपाय भारत में भी किए जा रहे हैं, लेकिन जब तक खुद में इच्छाशक्ति नहीं होगी, तब तक कोई भी उपाय कारगर नहीं हो सकता।

जरनैल सिंह

डिजिटल शासन के समक्ष चुनौतियां

प्रौद्योगिकी मानवता के लिए बड़ी धरोहर और संपदा है। जब देश में डिजिटल शासन की बात होती है तो नए प्रारूप और एकल खिड़की संस्कृति मुखर हो जाती है। नागरिक केंद्रित व्यवस्था के लिए सुशासन प्राप्त करना एक लंबे समय की दरकार रही है। ऐसे में डिजिटल शासन इसका बहुत बड़ा आधार है। यह एक ऐसा क्षेत्र है और एक ऐसा साधन भी है जिससे नौकरशाही तंत्र का समुचित प्रयोग कर कठिनाइयों को दूर किया जा सकता है। देखा जाए तो नागरिकों को सेवाओं की आपूर्ति व प्रशासन में पारदर्शिता की वृद्धि के साथ व्यापक नागरिक भागीदारी के मामले में डिजिटल शासन कहीं अधिक प्रासंगिक है।

डिजिटल शासन चुस्त और सुव्यवस्थित ई-सरकार का ताना-बाना है। प्रौद्योगिकी वही अच्छी होती है जो जीवन को आसान करती हो, जनोपयोगी नीतिगत अर्थव्यवस्था को सुनिश्चित करती हो और संतुलन कायम रखने में कमतर न हो। डिजिटल सेवाएं अपेक्षाकृत कम जटिल हैं, मगर डिजिटल शासन की सफलता के लिए मजबूत डिजिटल बुनियादी ढांचा तैयार करना जरूरी है। सरकार के समस्त कार्यों में प्रौद्योगिकी का अनुप्रयोग ई-शासन कहलाता है, जबकि न्यूनतम सरकार व अधिकतम शासन, प्रशासन में नैतिकता, जवाबदेही, उत्तरदायित्व की भावना व पारदर्शिता दक्ष सरकार के गुण हैं, जिसकी पूर्ति डिजिटल शासन के बगैर संभव नहीं है। पड़ताल बताती है कि डिजिटल शासन की रूपरेखा पांच दशक पुरानी है। हालांकि तब शासन डिजिटल तो नहीं था, मगर इलेक्ट्रानिक विधा के अंतर्गत आधारभूत व्यवस्था को सुसज्जित करने का प्रयास शुरू हो चुका था।

गौरतलब है कि इलेक्ट्रानिक विभाग की स्थापना 1970 में हुई थी और 1977 में राष्ट्रीय सूचना केंद्र के साथ ई-शासन की दिशा में पहला उठा कदम था। ई-शासन को बढ़ावा देने की दिशा में 1987 में प्रक्षेपित उपग्रह आधारित कंप्यूटर नेटवर्क क्रांतिकारी कदम था। इसका मुखर पक्ष 1991 के उदारीकरण के बाद देखने को मिलता है। 2006 में राष्ट्रीय ई-शासन योजना के प्रकटीकरण के बाद डिजिटल शासन का स्वरूप व्यापक रूप में सामने आया और इसी कड़ी में एक जनवरी 2015 को डिजिटल इंडिया योजना शुरू हुई। डिजिटल शासन के तीन मुख्य क्षेत्रों में प्रत्येक नागरिक की सुविधा के लिए बुनियादी ढांचा, शासन व मांग आधारित सेवाएं तथा नागरिकों का डिजिटल सशक्तिकरण जैसे लक्ष्य शामिल है। डिजिटल शासन शासन में दक्षता को बढ़ाता है। लोग, प्रक्रिया, प्रौद्योगिकी व संसाधन एक स्तंभ के रूप में शुमार होते हैं।

गौरतलब है कि डिजिटल इंडिया भारत को डिजिटल रूप से सशक्त समाज तथा ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था के रूप में परिवर्तित करने के उद्देश्य से शुरू किया गया अभियान है। भारत में 26 जनवरी 1950 को संविधान लागू होने के दिन से ही पंचवर्षीय योजनाओं और कई कार्यक्रमों के जरिए जन सशक्तिकरण के प्रयास शुरू हो गए थे। विदित हो कि सुशासन लोक सशक्तिकरण का पर्याय है। डिजिटल शासन इस दिशा में एक ऐसा उपकरण है जो योजनाओं को पारदर्शी तरीके से जनता तक परोसता है। भारत की पृष्ठभूमि में झांका जाए तो सात दशकों में विभिन्न आयोगों ने सुशासन व लोक संसाधनों के बेहतर प्रशासनिक प्रबंधन के बारे में अनुशंसाएं दी हैं जो डिजिटल शासन के माध्यम से कहीं अधिक ताकत के साथ और अधिक उपयोगी सिद्ध हो रही हैं। प्रथम प्रशासनिक सुधार आयोग (1966-70) ने सचिव स्तर से लेकर वित्तीय एवं योजना व विकेंद्रीकरण तक कई सुधार प्रस्तावित किए।

> किसी के पास मोबाइल होना डिजिटल हो जाने का प्रमाण नहीं है, जब तक कि उसके पास इंटरनेट आदि की सुविधा व जानकारी न हो। नीतियों में अस्पष्टता व ढांचागत कठिनाइयों के कारण महत्वाकांक्षी डिजिटल परियोजना का सफल कार्यान्वयन सुनिश्चित करने में कई चुनौतियां हैं। उदाहरण के लिए, बार-बार नेटवर्क का टूटना एक आम समस्या है।

1964 की के. संथानम रिपोर्ट के आधार पर भारतीय सतर्कता आयोग का गठन भ्रष्टाचार से निपटने के एक उपाय के रूप में परिलक्षित हुआ, जो मौजूदा समय में डिजिटल शासन के माध्यम से मजबूती से सामने आया है। डिजिटल शासन भ्रष्टाचार से निपटने व पारदर्शिता हासिल करने का एक अच्छा माध्यम साबित हो रहा है। डिजिटल शासन के समक्ष चुनौतियां भी कम नहीं हैं। और ये चुनौतियां केवल तकनीक से संबंधित ही नहीं हैं, बल्कि संगठनात्मक और संस्थात्मक के अलावा समावेशी विकास लक्ष्य हासिल करने और सतत विकास को बनाए रखने से भी जुड़ी हैं। डिजिटल शासन के लिए किए जाने वाले उपाय महंगे होते हैं। इनकी अवसंरचना में बिजली, इंटरनेट, डिजिटल उपकरण आदि बुनियादी सुविधाओं का यदि अभाव बना रहता है तो चुनौतियां बरकरार रहेंगी। जाहिर है, इन पर भारी निवेश की जरूरत है।

सरकार के समस्त कार्यों में प्रौद्योगिकी का अनुप्रयोग ही ई-शासन कहलाता है। किसानों के खाते में सम्मान निधि का हस्तांतरण डिजिटल शासन का ही उदाहरण है। ई-शिक्षा, ई-बैंकिंग, ई-टिकट, ई-सुविधा, ई-अस्पताल, ई-याचिका और ई-अदालत सहित ऐसे तमाम उदाहर हैं जो शासन को सुशासन की ओर ले जाते हैं। देश में साढ़े छह लाख गांव हैं, जहां बिजली और इंटरनेट से जुड़ना आज भी एक आम समस्या है। नवंबर 2021 तक पूरे देश में मोबाइल ग्राहकों की संख्या 120 करोड़ थी। साल 2025 तक भारत में इंटरनेट उपयोग करने वालों की तादाद 90 करोड़ हो जाएगी।

2024 तक भारत को पांच लाख करोड़ डालर की अर्थव्यवस्था बनने का लक्ष्य है। डिजिटलीकरण की चुनौतियां जैसे-जैसे कम होंगी, वैसे-वैसे अर्थव्यवस्था भी बढ़ेगी। भारत डिजिटल सेवा क्षेत्र में बढ़ रहे प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के लिए एक बड़ा ठिकाना भी है। इसकी सबसे बड़ी वजह यहां की जनसंख्या है जिसमें नए उद्यमों के लिए भरपूर संभावनाएं हैं।

जरनैल सिंह

एचएसजीएमसी की मतदाता सूची के नामों के पंजीकरण का कार्य करने के लिए अधिकारियों को किया प्राधिकृत

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र, चुनाव तहसीलदार एवं सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी कुरुक्षेत्र के सहायक नोडल अधिकारी संदीप कुमार ने कहा कि हरियाणा सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी गुरुद्वारा चुनाव आयुक्त के आदेशानुसार हरियाणा सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए चुनाव की शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की मतदाता सूची के नामों का पंजीकरण का कार्य चल रहा है। इस कार्य के लिए अधिकारियों को प्राधिकृत अधिकारी के रूप में नियुक्त किया गया है। अहम पहलू यह है कि हरियाणा सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की मतदाता सूची के लिए प्रार्थी द्वारा अपने नाम का पंजीकरण करवाने की तिथि को बढ़ा दिया गया है। अब इसके लिए संबंधित मतदाता 16 अक्टूबर 2023 तक अपना पंजीकरण करवा सकते है।

सहायक नोडल अधिकारी कुरुक्षेत्र संदीप कुमार ने जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा कि हरियाणा सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के चुनाव के लिए मतदाता सूची उपायुक्तों के माध्यम से तैयार करवाई जाएगी। इस मतदाता सूची के लिए नाम पंजीकरण हेतु आवेदन पत्र ग्रामीण क्षेत्र में पटवारी और शहरी क्षेत्र में नगर पालिका, नगर परिषद के पास निःशुल्क उपलब्ध है। उन्होंने

कहा कि कोई भी व्यक्ति जो हरियाणा सिख गुरुद्वारा प्रबंधक समिति की मतदाता सूची के लिए अपना नाम पंजीकृत करवाना चाहता है तो वह 16 अक्टूबर 2023 तक अपना आवेदन जमा करवा सकता है। इस मतदाता सूची में नाम दर्ज करवाने के लिए व्यक्ति को कुछ नियमों की पालना करनी होगी। इन नियमों के अनुसार पिछले 6 माह से कुरुक्षेत्र का सामान्य निवासी होना चाहिए, जो सिख है और 1 जनवरी 2023 को 18 वर्ष की आयु पूर्ण करता है, जो व्यक्ति दाडी या केशों की हजामत नहीं करता, धूम्रपान नहीं करता,किसी भी रूप में मास का प्रयोग नहीं करता, मादक पेय नहीं लेता वह अपना नाम मतदाता सूची में दर्ज करवाने के लिए हकदार हो सकता है।

उन्होंने कहा कि शहरी क्षेत्र में मतदाता सूचियों के नाम पंजीकरण के लिए कुरुक्षेत्र जिले में कुछ अधिकारियों को प्राधिकृत अधिकारी के रूप में प्राधिकृत किया गया है। इनमें नगर पालिका पिहोवा व इस्माइलाबाद के लिए नपा सचिव गुलशन कुमार, नगर पालिका शाहबाद के लिए सचिव बाबूल सिंह, लाडवा नगर पालिका के लिए सचिव रवि प्रकाश, नगर परिषद थानेसर के लिए कार्यकारी अधिकारी देवेन्द्र नरवाल को नियुक्त किया गया है तथा ग्रामीण क्षेत्र के लिए गांव के संबंधित पटवारी को नियुक्त किया गया है।

अंबेडकर मेधावी छात्र संशोधित योजना के तहत कर सकते है आवेदन

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र, उपायुक्त शांतनु शर्मा ने कहा कि हरियाणा सरकार के अनुसूचित एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग ने डा. भीमराव अंबेडकर मेधावी छात्र संशोधित योजना के लिए आवेदन करने की तारीख अब 31 जनवरी 2024 तक बढ़ा दी गई है। डा. भीमराव अम्बेडकर मेधावी छात्र संशोधित योजना में दसवीं, बारहवीं व स्नातक कक्षाओं में मेरिट प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के अनुसार अंक प्रतिशत के आधार पर ये स्कॉलरशिप दी जाती है।

उपायुक्त शांतनु शर्मा ने बातचीत करते हुए कहा कि अनुसूचित वर्ग में शहर के विद्यार्थी को दसवीं कक्षा में 70 प्रतिशत अंक व ग्रामीण विद्यार्थी को 60 प्रतिशत अंक लेने पर 8 हजार रुपए की छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। बारहवीं कक्षा में 75 प्रतिशत या इससे अधिक अंक लाने वाले शहरी छात्र या छात्रा को 8 से 10 हजार रुपए दिए जाएंगे। ग्रामीण विद्यार्थी के लिए 70 प्रतिशत अंक लाने जरूरी है। एससी श्रेणी में स्नातक कक्षा के शहरी छात्र को 65 प्रतिशत व ग्रामीण विद्यार्थी को 60 प्रतिशत अंक लाने के लिए 9 से 12 हजार रूपए की राशि स्कॉलरशिप के तौर पर दी जाती है। मैट्रिक में मेरिट लाने वाले विद्यार्थियों को 8 हजार रूपए की स्कॉलरशिप दी जाती है।

उन्होंने कहा कि पिछड़ा वर्ग ए के लिए शहर व गांव के हिसाब से दसवीं कक्षा में 70 प्रतिशत व 60 प्रतिशत तथा पिछड़ा वर्ग बी में यही शर्त 80 प्रतिशत व 75 प्रतिशत रखी गई है। अन्य वर्ग में भी शहरी छात्र को दसवीं कक्षा में 80 प्रतिशत व ग्रामीण विद्यार्थी को 75 प्रतिशत अंक लाने जरूरी है। आवेदन के लिए शैक्षणिक प्रमाण पत्र, रिहायशी प्रमाण पत्र,चार लाख रूपए से कम वार्षिक आय का प्रमाण पत्र, बैंक पास बुक, जाति प्रमाण पत्र आदि दस्तावेज संलग्न किए जाने आवश्यक है। छात्र अपने आवेदन सरलहरियाणा.जीओवी.इन पर 31 जनवरी 2024 तक कर सकते है।

देश-धर्म के लिए सरबंस दानी श्री गुरु गोबिंद सिंह जी का महान बलिदान

इतिहास पुरुष कभी भी राजसत्ता प्राप्ति, जमीन-जायदाद, धन-सम्पदा या यश प्राप्ति के लिए लड़ाइयां नहीं लड़ते। श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ऐसे इतिहास पुरुष थे, जिन्होंने ताउम्र अन्याय, अधर्म, अत्याचार और दमन के खिलाफ तलवार उठाई और लड़ाइयां लड़ीं। गुरु जी की 3 पीढ़ियों ने देश-धर्म की रक्षा के लिए महान बलिदान दिया।

आज देश अपनी स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ 'आजादी के अमृत महोत्सव' के रूप में मना रहा है, ऐसे में पूरे देश में स्वतंत्रता सेनानियों, शहीदों, बलिदानियों को याद किया जा रहा है। सिखों के 10वें गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंह जी को उनकी जयंती पर नमन कर प्रत्येक भारतवासी गर्व महसूस कर रहा है।

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी एक महान दार्शनिक, प्रख्यात कवि, निडर एवं निर्भीक योद्धा, महान लेखक, युद्ध कौशल और संगीत के पारखी भी थे। उनका जन्म 1666 में पटना में हुआ। वे 9वें सिख गुरु, श्री गुरु तेग बहादर और माता गुजरी के इकलौते बेटे थे, जिनका बचपन का नाम गोबिंद राय था।

सन् 1699 में बैसाखी के दिन श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने खालसा पंथ की स्थापना कर 5 व्यक्तियों को अमृत चखा कर 'पांच प्यारे' बना दिया। इन पांच प्यारों में सभी वर्गों के व्यक्ति थे। इस प्रकार से उन्होंने जात-पात मिटाने के उद्देश्य से अमृत चखाया।

बाद में उन्होंने स्वयं भी अमृत चखा और गोबिंद राय से गोबिंद सिंह बन गए। श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने एक खालसा वाणी 'वाहे गुरुजी का खालसा, वाहे गुरुजी की फतेह', स्थापित की। साथ ही उन्होंने आदर्श जीवन जीने और स्वयं पर नियंत्रण के लिए खालसा के पांच मूल सिद्धांतों की भी स्थापना की। जिनमें केश, कंघा, कड़ा, कच्छा, किरपाण शामिल हैं। ये सिद्धांत चरित्र निर्माण के मार्ग थे। उनका मानना था कि व्यक्ति चरित्रवान होकर ही विपरीत परिस्थितियों व अत्याचारों के खिलाफ लड़ सकता है।

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी की वीरता और लोकप्रियता से आस-पास के पहाड़ी राजा द्वेष करने लगे, यहां तक कि बिलासपुर के राजा भीमचंद सहित गढ़वाल, कांगड़ा के राजाओं ने मुगल शासक औरंगजेब के पास जाकर श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के खिलाफ लडऩे के लिए सैनिक सहायता मांगी और कहा कि इसके बदले में वे वार्षिक लगान देंगे। भीमचंद की माता चम्पा देवी ने श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के खिलाफ युद्ध का विरोध किया और कहा कि वह एक महान संत हैं, उनके साथ युद्ध नहीं, बल्कि उनको घर बुला कर सम्मान देना चाहिए।

इसी प्रकार जब औरंगजेब की सेना का जनरल सैयद खान युद्ध के लिए आनंदपुर साहिब जाने लगा तो रास्ते में सढौरा नामक स्थान पर अपनी बहन नसरीना से मिला। उसकी बहन ने सैयद खान को श्री गुरुगोबिंद सिंह जी के खिलाफ युद्ध करने से रोका और कहा कि वह पहले से ही गुरु जी की अनुयायी हैं और श्री गुरु गोबिंद सिंह जी एक धार्मिक व आध्यात्मिक संत हैं। यहां तक कि उन्होंने पहले से ही सैयद खान की हार की भविष्यवाणी कर दी थी। नसरीना खान ने अपने पति व बेटों को श्री गुरु गोबिंद सिंह जी की सेना में भर्ती करवा दिया था।

सैयद खान युद्ध के लिए निकल पड़ा। युद्ध के मैदान में नीले घोड़े पर सवार श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी जब मुगल सैनिकों को मौत के घाट उतार रहे थे तो सैयद खान गुरु जी के सामने आया। तब गुरु जी स्वयं घोड़े से उतरे और वह सैयद खान को मारने के लिए तैयार नहीं हुए। सैयद खान गुरु जी का आभा और तेज से प्रभावित हुआ और युद्ध मैदान छोड़ कर योग, ध्यान व शांति प्राप्ति के लिए पर्वतों में चला गया।

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के 4 पुत्र थे, जिनके नाम साहिबजादा अजीत सिंह, साहिबजादा जुझार सिंह, साहिबजादा जोरावर सिंह, साहिबजादा फतेह सिंह थे। उन्होंने अपने चारों पुत्र धर्म की रक्षा के लिए कुर्बान किए। मुगल शासक द्वारा दो पुत्रों जोरावर सिंह और फतेह सिंह को सरहिंद में दीवार में चुनवा दिया गया। दो पुत्र अजीत सिंह और जुझार सिंह युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए। श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने पुत्रों की शहादत पर कहा था-

इन पुत्रन के सीस पर, वार दिए सुत चार।
चार मुए तो क्या हुआ, जीवित कई हजार॥

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने जीवन में आनंदपुर, भंगाणी, नंदौन, गुलेर, निर्मोहगढ़, बसोली, चमकौर, सिरसा व मुक्तसर सहित 14 युद्ध किए। इन जंगों में पहाड़ी राजाओं एवं मुगल सूबेदारों ने हर बार मुंह की खाई। श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने कभी स्वार्थ व निज-हित के लिए नहीं, बल्कि उत्पीडऩ व अन्याय के खिलाफ लड़ाई लड़ी। इस कारण हिन्दू व मुस्लिम धर्मों के लोग उनके अनुयायी थे।

सितम्बर 1708 में गुरु जी नांदेड़ चले गए और बैरागी लक्ष्मण दास को अमृत छका कर और युद्ध कौशल से पारंगत कर बंदा सिंह बहादुर बनाया तथा उन्हें खालसा सेना का कमांडर बना कर संघर्ष के लिए पंजाब भेज दिया। पंजाब पहुंच कर बंदा सिंह बहादुर ने चप्पड़ चिड़ी की जंग जीती। अक्तूबर 1708 में महाराष्ट्र के नांदेड़ साहिब में श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपनी आखिरी सांस ली। इस प्रकार पहले पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी, फिर चारों पुत्रों ने और बाद में श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने स्वयं बलिदान देकर धर्म की रक्षा की।

स्वामी विवेकानंद जी ने गुरु गोबिंद सिंह जी को एक महान दार्शनिक, संत, आत्मबलिदानी, तपस्वी और स्वन्अनुशासित बता कर उनकी बहादुरी की प्रशंसा की थी।

स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था मुगल काल में जब हिन्दू और मुसलमान दोनों ही धर्मों के लोगों का उत्पीडऩ हो रहा था, तब श्री गुरु गोबिंद जी ने अन्याय, अधर्म और अत्याचारों के खिलाफ और उत्पीड़ित जनता की भलाई के लिए बलिदान दिया, जो एक महान बलिदान है। इस प्रकार से गुरु गोबिंद सिंह जी महानों में महान थे।

गीता में कहा गया है कि 'कर्म करो, फल की चिन्ता न करो'। ठीक इसी प्रकार श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा है 'देहि शिवा वर मोहे इहै, शुभ करमन ते कबहूं न टरूं' यानी हम अच्छे कर्मों से कभी पीछे न हटें, परिणाम भले चाहे जो भी हो। उनके इन विचारों व वाणियों से पता चलता है कि गुरु गोबिंद सिंह जी ने कर्म, सिद्धान्त, समभाव, समानता, निडरता, स्वतंत्रता का संदेश देकर समाज को एक सूत्र में पिरोने का काम किया। उन्होंने कभी भी मानवीय व नैतिक मूल्यों से समझौता नहीं किया। आज फिर जरूरत है कि उनके बताए मार्ग पर चल कर हम सभी धर्म, समाज व भाईचारे को मजबूत कर 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के लिए कार्य करें।

बंडारू दत्तात्रेय (माननीय राज्यपाल हरियाणा)

हरियाणा में आवासीय, व्यावसायिक व संस्थागत संपत्तियों की ई-नीलामी 26 अक्टूबर को

गजब हरियाणा न्यूज

कुरुक्षेत्र, हाउसिंग बोर्ड हरियाणा द्वारा विभिन्न जिलों की आवासीय, व्यावसायिक एवं संस्थागत संपत्तियों की एचबीएच.जीओवी.इन पोर्टल के माध्यम से 26 अक्टूबर 2023 को ई-नीलामी की जाएगी। बोर्ड के प्रवक्ता ने इस संबंध में विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि बोर्ड द्वारा प्रदेश के विभिन्न स्थानों जिनमें कुरुक्षेत्र, रोहतक, सोनीपत, हिसार, पानीपत, रेवाड़ी, पलवल, सोनीपत, यमुनानगर, अलीपुर, झज्जर, सिरसा, फरीदाबाद, फतेहाबाद, सोहना, अम्बाला कैंट व करनाल में आवासीय संपत्तियों की ई-नीलामी की जाएगी। ईएमडी डिपॉजिट हेतु अंतिम तिथि 23 अक्टूबर 2023 है। बोर्ड द्वारा एक हजार रुपये व 18 प्रतिशत जीएसटी पंजीकरण शुल्क तथा 500 रुपये व 18 प्रतिशत जीएसटी प्रोसेसिंग शुल्क निर्धारित किया गया है।

उन्होंने बताया कि ई-नीलामी एचबीएच.जीओवी.इन पोर्टल पर सुबह 10 बजे शुरू की जाएगी। इस संबंध में स्थलों की पूरी जानकारी और ई-नीलामी के नियम और शर्तें हाऊसिंग बोर्ड हरियाणा की ईमेल एचबीएचईएयूएसीआईओएनडब्ल्यूए टदरेटजीमेल.कॉम से तथा हेल्पलाइन नंबर 0172-3520001 पर प्राप्त की जा सकती हैं।

हरियाणा यूनियन ऑफ जर्नालिस्ट ने पत्रकारों की पेंशन वृद्धि पर मुख्यमंत्री का आभार प्रकट किया

गजब हरियाणा

पानीपत, हरियाणा यूनियन ऑफ जर्नालिस्ट (ट्रेड) ने पत्रकारों की पैंशन बढ़ाए जाने के लिए मुख्यमंत्री मनोहरलाल का आभार व्यक्त किया है। वीरवार को यूनियन के पदाधिकारियों ने यूनियन के प्रदेशाध्यक्ष आर.पी.वशिष्ठ की अध्यक्षता में मीडिया कॉर्डिनेटर रणदीप घणघस को धन्यवाद पत्र सौंपा व पत्रकारों की पेंशन 10 हजार से बढ़ाकर 15 हजार करने पर आभार प्रकट किया।

मुख्यमंत्री के पत्रकारों की पैंशन बढ़ाने के फैसलें को लेकर मीडिया जगत में प्रशंसा की जा रही है। राज्य सरकार हमेशा से पत्रकारों के हित के साथ जुड़ी है। मुख्यमंत्री ने पत्रकारों की पेंशन में वृद्धि करके पत्रकारों का मान-सम्मान बढ़ाया है। मुख्यमंत्री द्वारा की गई इस वृद्धि से पत्रकारों का मनोबल बढ़ेगा। धन्यवाद पत्र सौंपने के दौरान हुकुमचंद मेहता, कमल हुसैन, रामकुमार इत्यादि उपस्थित रहे।

बाल भवन में एकल नृत्य प्रतियोगिता प्रथम व द्वितीय समूहों में हुई आयाजित

गजब हरियाणा

कैथल, जिला बाल कल्याण अधिकारी बलबीर चौहान ने बताया कि बाल दिवस 2023 के उपलक्ष पर डीसी प्रशांत पंवार के मार्गदर्शन में जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं में वीरवार को एकल नृत्य प्रतियोगिता प्रथम व द्वितीय समूहों में आयजित करवाई गई। इन सभी प्रतियोगिताओं में जिले के सरकारी व गैर सरकारी स्कूलों के लगभग 350 बच्चों ने भाग लिया । प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय व सांत्वना स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को बाल दिवस के अवसर पर 14 नवंबर 2023 को बाल भवन में पुरस्कृत किया जायेगा व प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को डिविजनल स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए भेजा जायेगा । इन प्रतियोगिताओं में निर्णायक मण्डल की भूमिका अनिता गोयल, इपशा व लव शर्मा द्वारा निभाई गई। उन्होंने बताया कि इसी कड़ी में दिनांक 13 अक्तूबर को एकल शास्त्रीय नृत्य के द्वितीय समूह व एकल नृत्य प्रतियोगिता तृतीय व चतुर्थ समूहों में आयोजित करवाई जाएगी। इस कार्यक्रम में जैली राम बंसल, कृष्ण श्योकन्द, ओमप्रकाश तथा समस्त स्टाफ व विभिन्न स्कूलों से बच्चों के साथ आए अध्यापकगण एवं अभिभावकगण उपस्थित रहे।

न्यायपालिका में जातिवाद पर ब्राह्मण जज का बड़ा बयान

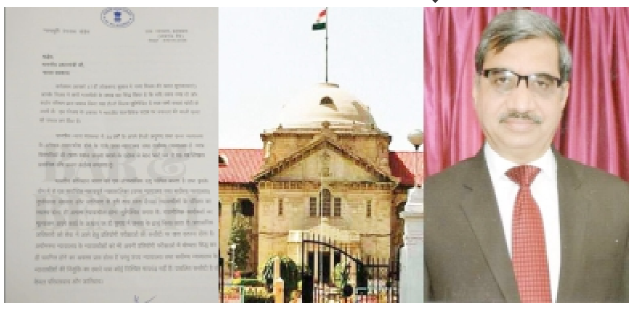

नई दिल्ली। न्यायपालिका एक ऐसा क्षेत्र है, जहां दलितों, आदिवासियों और पिछड़ों को मौका नहीं मिल पाया है। लोअर कोर्ट में वंचित समुदाय के जज दिख भी जाते हैं तो हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में एससी/एसटी और ओबीसी जजों का नहीं होना हमेशा से एक बड़ा मुद्दा रहा है। वंचित समाज के तमाम वकील और एक्टिविस्ट इसका कारण उच्च न्यायालयों में फैले जातिवाद और परिवारवाद बताते हैं। यही आरोप इस बार इलाहाबाद हाईकोर्ट के एक जज ने लगाया है। इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज रंगनाथ पांडे ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को इस संबंध में पत्र लिख कर यह मामला उठाया है। उन्होंने पत्र में लिखा है कि 'न्यायपालिका दुर्भाग्यवश वंशवाद और जातिवाद से बुरी तरह ग्रस्त हैं और जजों के परिवार से होना ही अगला न्यायधीश होना सुनिश्चित करता है। जस्टिस रंगनाथ पांडे ने अपने खत में लिखा है, 'भारतीय संविधान भारत को एक लोकतांत्रिक राष्ट्र घोषित करता है तथा इसमें सबसे अहम न्यायपालिका दुर्भाग्यवश वंशवाद और जातिवाद से बुरी तरह ग्रस्त है। यहां न्यायधीशों के परिवार का सदस्य होना ही अगला न्यायधीश होना सुनिश्चित करता है।'

उन्होंने उस बहस को भी हवा दी है जिसमें हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में जज नियुक्त होने के लिए प्रतियोगी परीक्षा को अनिवार्य करने की बात की जाती है। प्रधानमंत्री को लिखे पत्र में उन्होंने लिखा है, 'राजनीतिक-कार्यकर्ता का मूल्यांकन अपने कार्य के आधार पर ही चुनाव में जनता द्वारा किया जाता है। प्रशासनिक अधिकारी को सेवा में आने के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं की कसौटी पर उतरना होता है। अधीनस्थ न्यायालय के न्यायाधीशों को भी प्रतियोगी परीक्षाओं में योग्यता सिद्ध करके ही चयनित होने का अवसर मिलता है। लेकिन उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय में जजों की नियुक्ति के लिए हमारे पास कोई निश्चित मापदंड नहीं है। प्रचलित कसौटी है तो केवल परिवारवाद और जातिवाद।'

एक जुलाई को लिखे अपने पत्र में जस्टिस पांडेय ने लिखा है कि उन्हें 34 वर्ष के सेवाकाल में बड़ी संख्या में सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट के न्यायाधीशों को देखने का अवसर मिला है जिनमें कई न्यायाधीशों के पास सामान्य विधिक ज्ञान तक नहीं था। कई अधिवक्ताओं के पास न्याय प्रक्रिया की संतोषजनक जानकारी तक नहीं है। कोलेजियम सदस्यों का पसंदीदा होने के आधार पर न्यायाधीश नियुक्त कर दिए जाते हैं। यह स्थिति बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। अयोग्य न्यायाधिश होने के कारण किस प्रकार निष्पक्ष न्यायिक कार्य का निष्पादन होता होगा, यह स्वयं में विचारणीय प्रश्न है। अपने इस पत्र में न्यायाधीश ने प्रधानमंत्री से राष्ट्रीय न्यायिक चयन आयोग स्थापित करने का प्रयास करने की मांग की है।

लघुकथा
भ्रष्टाचार

रमेश बाबू आर्मी में कार्यरत हैं। उनके दो बेटी व एक बेटा है, जो की युवा अवस्था में कदम रख रहे हैं। बच्चों की बढ़ती उम्र को देख रमेश जब छुट्टी लेकर घर आया तो पत्नी ने कहा सुनो, अब बच्चे बड़े हो रहे हैं यही उम्र होती है बिगड़ने की, आप अब रिटायरमेंट लेकर हमारे साथ रहो। मैं तो घर के काम में व्यस्त रहती हूं उनका इतना ध्यान नहीं रख पाऊंगी और फिर आप को तो फौजी कोटे से जल्दी ही दूसरी नौकरी भी मिल जायेगी। जिससे कम से कम हर रोज बच्चों के पास रहकर उनका ध्यान रख पाओगे।

रमेश ने सोच समझकर कहा हूं कह तो तुम सही रही हो, कोशिश करता हूं। रमेश कुछ ही दिनों बाद स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेकर घर आ गया और दूसरी नौकरी की तैयारी करने लगा। रमेश को फोजी कोटे व मेहनत से सरकारी स्कूल में पी. टी.आई की नौकरी मिल गई।

रमेश की बड़ी लड़की ने 12वीं के बाद जेईई का पेपर पास करके विश्वविद्यालय में बी टेक में दाखिले के लिए अप्लाई किया। काउंसलिंग के समय रमेश बिटिया के साथ आया तो दूसरे बच्चे के पिता से बातें हुई। आपस में दोनों का परिचय हुआ। इतफाक से उसने भी स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ले रखी थी और वह भी अब पुलिस विभाग में नौकरी कर रहा था। दोनों में बातें होने लगी की पता नहीं एडमिशन होगा या नहीं। रमेश ने दूसरे से कहा भाई मेरी बिटिया का तो हो जाएगा क्योंकि हमने तो इकोनोमिक वीकर सेक्शन का सर्टिफिकेट लगा रखा है। दूसरा मन ही मन सोचने लगा, न जाने ये भ्रष्टाचार........।

आशा विजय 'विभोर'

लॉर्ड मैकाले जन्मदिन विशेष (25 अक्तूबर)
मैकाले की शिक्षा पद्धति ने दिया बहुजनों को आगे बढ़ने का अवसर

भारत में ऐसे विद्वानों की कमी नहीं है जो प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति का गुणगान करते नहीं थकते और लॉर्ड मैकाले की आधुनिक शिक्षा पद्धति को पानी-पी पीकर गालियां देते हैं। लेकिन इन्हीं लार्ड मैकाले की वजह से दलितों के लिए शिक्षा का रास्ता खुला और उन्हें न्याय मिलने का मार्ग प्रशस्त हो सका। ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासन ने सन 1835 ई. में भारत के लिये एक विधि आयोग का गठन किया था, जिसका अध्यक्ष बना कर लॉर्ड मैकाले को भारत भेजा गया। इसी वर्ष लार्ड मैकाले ने भारत में नई शिक्षा नीति की नींव रखी। 6 अक्टूबर 1860 को लॉर्ड मैकाले द्वारा लिखी गई भारतीय दण्ड संहिता लागू हुई और मनुस्मृति का विधान खत्म हुआ।

इसके पहले भारत में मनुस्मृति के काले कानून लागू थे, जिनके अनुसार अगर ब्राह्मण हत्या का आरोपी भी होता था तो उसे मृत्यु दण्ड नहीं दिया जाता था और वेद वाक्य सुन लेने मात्र के अपराध में शूद्र के कानों में पिघलता शीशा डाल देने का प्रावधान था। वैसे तो अंग्रेज भी 1750 ई. तक लगभग आधे भारत पर शासन करने लग गये थे, परन्तु कानून तब भी मनुस्मृति के ही चलते थे। स्कूल 1833 ई. से ही अंग्रेजी सरकार द्वारा खोल दिये गये थे, परन्तु शूद्रों का प्रवेश तब भी वर्जित था। लॉर्ड मैकाले ने यहां का सामाजिक भेदभाव, शिक्षण में भेदभाव और दण्ड संहिता में भेदभाव देखकर ही आधुनिक शिक्षा पद्धति की नींव रखी और भारतीय दण्ड संहिता लिखी। जहां आधुनिक शिक्षा पद्धति में सबके लिये शिक्षा के द्वार खुले थे, वहीं भारतीय दण्ड संहिता के कानून ब्राह्मण और मेहतर, सबके लिये समान थे, जिसके चलते 1874 ई. में नन्द कुमार नामक ब्राह्मण को हत्या के आरोप में फांसी की सजा दी। मनुस्मृति की व्यवस्था से ब्राह्मणों को इतनी महानता प्राप्त होती रही थी कि वे अपने आपको धरती का प्राणी होते हुए भी आसमानी पुरुष अर्थात देवताओं के भी देव समझा करते थे। लॉर्ड मैकाले की आधुनिक शिक्षा पद्धति से ब्राह्मणों को अपने सारे विषेषाधिकार छिनते नजर आये, इसी कारण से उन्होंने प्राण-प्रण से इस नीति का विरोध किया।

इनकी नजर में लॉर्ड मैकाले की आधुनिक शिक्षा पद्धति केवल बाबू बनाने की शिक्षा देती है, पर मेरा मानना है कि लॉर्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति से बाबू तो बन सकते हैं, प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति से तो वो भी नहीं बन सके। हां, ब्राह्मण सब कुछ बन सके थे, चाहे वह पढ़ा-लिखा हो या नहीं। अन्य जातियों के लिये तो ये रास्ते बन्द ही थे। प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति के समर्थक यह बताने का कष्ट करेंगे कि किस काल में किस राजा के यहां कोई भंगी, चमार, मोची, बैरवा, रैगर, भांभी, कोली, धोबी, मीणा, नाई, कुम्हार, खाती या इसी प्रकार कोई भी अनुसूचित जाति, जनजाति या अन्य पिछड़ा वर्ग का व्यक्ति मंत्री, पेशकार, महामंत्री या सलाहकार रहा हो? अत: इन जातियों के लिये तो यह शिक्षा पद्धति कोहनी पर लगा गुड़ ही साबित हुई। ऐसी पद्धति की लाख अच्छाईयां रही होंगी, पर यदि हमें पढ़ाया ही नहीं जाता हो, गुरुकुलों में प्रवेश ही नहीं होता हो तो हमारे किस काम की? सरसरी तौर पर इन दोनों शिक्षा पद्धतियों में तुलना करते हैं। फिर आप स्वयं ही निर्णय ले सकते है कि कौन-सी शिक्षा पद्धति कैसी है?

प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति

1. इसका आधार प्राचीन भारतीय धर्मग्रन्थ रहे।
2. इसमें शिक्षा मात्र ब्राह्मणों द्वारा दी जाती थी।
3. इसमें शिक्षा पाने के अधिकारी मात्र सवर्ण ही होते थे।
4. इसमें धार्मिक पूजापाठ और कर्मकाण्ड का बोलबाला रहता था।
5. इसमें धर्मिक ग्रन्थ, देवी-देवताओं की कहानियां, चिकित्सा, भेशजी, कला और तंत्र, मंत्र, ज्योतिष, जादू टोना आदि शामिल रहे हैं।
6. इसका माध्यम मुख्यत: संस्कृत रहता था।
7. इसमें ज्ञान-विज्ञान, भूगोल, इतिहास और आधुनिक विषयों का अभाव रहता था, अथवा अतिश्योक्तिपूर्ण ढंग से बात कही जाती थी. जैसे:-राम ने हजारों वर्ष राज किया, भारत जम्बू द्वीप में था। कुंभकर्ण का शरीर कई योजन था, कोटि-कोटि सेना लड़ी, आदि।
8. इस नीति के तहत कभी ऐसा कोई गुरुकुल या विद्यालय नहीं खोला गया, जिसमें सभी वर्णों और जातियों के बच्चे पढ़तें हों।
9. इस शिक्षा नीति ने कोई अंदोलन खड़ा नहीं किया, बल्कि लोगों को अंधविश्वासी, धर्मप्राण, अतार्किक और सब कुछ भगवान पर छोड़ देने वाला ही बनाया।
10. यह गुरुकुलों में लागू होती थी। वैसे नालंदा, तक्षशिला और विक्रमशिला विश्वविद्यालय भी हुए, शिक्षा की प्रणाली में कोई अंतर नहीं था।
11. गुरुकुलों में प्रवेश से पूर्व छात्र का यज्ञोपवीत संस्कार अनिवार्य था। चूंकि हिन्दू धर्म शास्त्रों में शूद्रों का यज्ञोपवीत संस्कार वर्जित है, अत: शूद्र व दलित तो इसको ग्रहण ही नहीं कर सकते थे। अत: इनके लिये यह किसी काम की नहीं रही।
12. इसमें तर्क का कोई स्थान नहीं था। धर्म और कर्मकाण्ड पर तर्क करने वाले को नास्तिक का करार दे दिया जाता था। जैसे चार्वाक, तथागत बुद्ध और इसी तरह अन्य।
13. इस प्रणाली में चतुर्वर्ण समानता का सिद्धांत नहीं रहा।
14. प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति में दलित विरोधी भावनाएं प्रबलता से रही हैं। जैसे कि एकलव्य का अंगूठा काटना, शम्बूक की हत्या आदि।
15. इससे हम विश्व से परिचित नहीं हो पाते थे। मात्र भारत और उसकी महिमा ही गाये जाते थे।
16. इसमें वर्ण व्यवस्था का वर्चस्व था।
17. इसमें व्रत, पूजा-पाठ, त्योहार, तीर्थ यात्राओं आदि का बहुत महत्त्व रहा।

लार्ड मैकाले की आधुनिक शिक्षा पद्धति

1. इसका आधार तत्कालीन परिस्थितियों के अनुसार उत्पन्न आवश्यकतायें रहीं।
2. लॉर्ड मैकाले ने शिक्षक भर्ती की नई व्यवस्था की, जिसमें हर जाति व धर्म का व्यक्ति शिक्षक बन सकता था। तभी तो रामजी सकपाल (बाबा साहेब डॉक्टर अम्बेडकर के पिताजी) सेना में शिक्षक बने।
3. जो भी शिक्षा को ग्रहण करने की इच्छा और क्षमता रखता है, वह इसे ग्रहण कर सकता है।
4. इसमें धार्मिक पूजापाठ और कर्मकाण्ड के बजाय तार्किकता को महत्त्व दिया जाता है।
5. इसमें इतिहास, कला, भूगोल, भाषा-विज्ञान, विज्ञान, अभियांत्रिकी, चिकित्सा, भेशजी, प्रबन्धन और अनेक आधुनिक विद्यायें शामिल हैं।
6. इसका माध्यम प्रारम्भ में अंग्रेजी भाषा और बाद में इसके साथ-साथ सभी प्रमुख क्षेत्रीय भाषाएं हो गई।
7. इसमें ज्ञान-विज्ञान, भूगोल, इतिहास और आधुनिक विषयों की प्रचुरता रहती है और अतिश्योक्ति पूर्ण या अविश्वसनीय बातों का कोई स्थान नहीं होता है।
8. इस नीति के तहत सर्व प्रथम 1835 से 1853 तक लगभग प्रत्येक जिले में एक स्कूल खोला गया. आज यही कार्य राज्य और केंद्र सरकारें कर रही हैं। साथ ही निजी संस्थाएं भी शामिल हैं।
9. भारत में स्वाधीनता आंदोलन खड़ा हुआ, उसमें लार्ड मैकाले की आधुनिक शिक्षा पद्धति का बहुत भारी योगदान रहा, क्योंकि जन सामान्य पढ़ा-लिखा होने से उसे देश-विदेश की जानकारी मिलने लगी, जो इस आंदोलन में सहायक रही।
10. यह विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में लागू होती आई है।
11. इसको ग्रहण करने में किसी तरह की कोई पाबन्दी नहीं रही, अत: यह जन साधारण और दलितों के लिये सर्व सुलभ रही। अगर शूद्रों और दलितों का भला किसी शिक्षा से हुआ तो वह लार्ड मैकाले की आधुनिक शिक्षा प्रणाली से ही हुआ। इसी से पढ़ लिख कर बाबासाहेब अम्बेडकर डॉक्टर बने।
12. इसमें तर्क को पूरा स्थान दिया गया है। धर्म अथवा आस्तिकता-नास्तिकता से इसका कोई वास्ता नहीं है।
13. यह गरीब भिखारी से लेकर राजा-महाराजा, सब के लिये सुलभ है।
14. इसमें सर्व वर्ण व सर्व धर्म समान हैं. आदिवासी और मूलनिवासी भी इसमें शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। लेकिन जहां-जहां संकीर्ण मानसिकता वाले ब्राह्मणवादियों का वर्चस्व बढ़ा है, उन्होंने इसमें भी दलितों को शिक्षा से वंचित किया है।
15. इससे हम आधुनिक विश्व से सरलता से परिचित हो रहे हैं।
16. इसमें सभी जातियां, वर्ण और धर्म समान हैं।

इसमें इस प्रकार की बातों का कोई महत्व नहीं है, परन्तु इसमें भी जहां-जहां ब्राह्मणवादी लोग घुसे हैं, उन्होंने ऐसी बातों को मिला दिया है. अब फैसला प्रबुद्ध पाठकों को करना है कि कौन सी शिक्षा पद्धति अच्छी है? क्यों न दलित समाज द्वारा 25 अक्टूबर को लार्ड मैकाले का जन्मदिवस मनाया जाये?

सोशल मीडिया साभार

GH WORLD TV
गजब NEWS HARYANA
सच्ची व स्टीक खबर-आप तक

जरुरी सूचना

गजब हरियाणा समाचार पत्र, अपना हरियाणा - अपना अखबार, 5 वर्षों से आपकी सेवा में।
गजब हरियाणा के सभी समाचार पत्र और अन्य खबरें पढ़े निशुल्क -
हमारी वेबसाइट : www.gajabharyana.com पर
गजब हरियाणा का सामाजिक यूट्यूब चैनल और फेसबुक पेज पर देखे -
gajab haryana news
धार्मिक यूट्यूब चैनल और फेसबुक पेज -
Gh World Tv
खबरें व धार्मिक कार्यक्रम की कवरेज करवाने के लिए संपर्क करें: 9138203233
gajabharyananews@gmail.com

अमृतवाणी वचन

1- सबके सम्मुख अपने दिल का भेद न खोलो परन्तु सतगुरु या राहबर से कुछ भी न छिपाओ।

2- प्रेम सहित सबसे बात करो परन्तु लापरवाही का बर्ताव किसी से भी न करो।

3- सदैव सतगुरु या उनके प्रिय सेवकों की संगति करो और मनमुखों से पृथक रहो।

4- सद्गुरु दरबार की सेवा का पूरा-पूरा लाभ तो तभी प्राप्त होगा जबकि सेवा हितचित से आज्ञानुसार की जावे।

5- देश भ्रमण करने से या स्थान बदलने से मनुष्य को सुख नहीं मिलता जब तक मन के रुख को परिवर्तित करके सत्संग में न लगाया जाये।

अमृतवाणी वाणी

संत शिरोमणि सतगुरु रविदास जिओ की

परचै राम रवै जउ कोई ।।पारसु परसै दुविधा न होई ।।रहाउ ।।
सो मुनि मन की दुविधा खाई ।।बिन दुआरें त्रिलोक समाई ।।

जय गुरुदेव

व्याख्या :श्री गुरू रविदास महाराज जी पवित्र अमृतवाणी में फरमान करते हुए कहते हैं कि जो जीव गुरु के उपदेश के अनुसार प्रभु का सिमरन करता है ।उसके जीवन में से दुविधा का नाश हो जाता है ।जैसे लोहा पारस के स्पर्श से सोना बन जाता है ।ऐसे ही वह जीव पारस रुपी गुरु से मिलकर सोने की भांति शुद हो जाता है । वास्तविक मुनि संसार में वह है जो मन में से दुविधा खत्म कर देता है ।और दस द्वारों से मुक्त तीन लोक (मात लोक , आकाश लोक , पाताल लोक) में समाए हुए प्रभु में विलीन हो जाता है ।

धन गुरुदेव

साई बुल्ले काफी : 6

राँझा राँझा कर दी नी मैं आपे राँझा होई ।
सद्दो नी मैनूँ धीदो राँझा हीर ना आखो कोई ।।
राँझा मैं विच्च मैं रांझे विच्च होर ख़्याल ना कोई ।
मैं नहीं उह आप है आपनी आप करे दिल-जोई ।।
राँझा राँझा कर दी नी मैं आपे राँझा होई ।
हथ खूंडी मेरे अग्गे मंगू मोढे भूरा लोई ।
'बुल्ला' हीर सलेटी वेखो कित्थे जा खलोई ।।
राँझा राँझा कर दी नी मैं आपे राँझा होई ।
सद्दो नी मैनूँ धीदो राँझा हीर ना आखो कोई ।

इतिहास के पन्नो से.....

पटना में भिखना पहाड़ी नामक मुहल्ला है। भिखना पहाड़ी का निर्माण सम्राट अशोक मौर्य ने कराया था। इसी पहाड़ी पर सम्राट अशोक मौर्य के पुत्र महेंद्र रहते थे।

19 वीं सदी के आखिरी दशक में लॉरेंस वाडेल ने भिखना पहाड़ी की जाँच की थी। उन्होंने लिखा है कि भिखना पहाड़ी 40 फीट ऊँची और 1 मील के घेरे में है।

भिखना पहाड़ी पर मठ है। मठ में मूर्ति है। मूर्ति का नाम भिखना कुँवर है, जिसकी पूजा होती है। भिखना कुँवर दरअसल भिक्खु कुमार हैं और भिक्खु कुमार वास्तव में कुमार महेंद्र हैं। वहीं महेंद्र जो सम्राट असोक के पुत्र थे।

संदर्भ : डिस्कवरी ऑफ दी इग्जैक्ट साइट ऑफ अशोक क्लासिक कैपिटल ऑफ पाटलिपुत्र (1892)

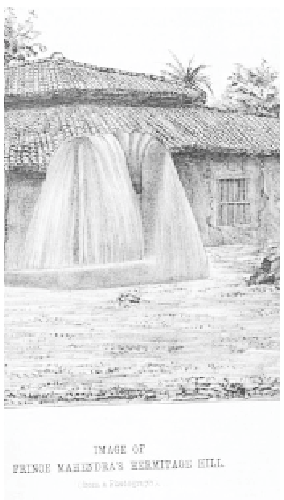

सत्संग का महत्व

महात्मा बुद्ध एक गाँव में ठहरे हुए थे। वे प्रतिदिन शाम को वहाँ पर सत्संग करते थे। भक्तों की भीड़ होती थी, क्योंकि उनके प्रवचनों से जीवन को सही दिशा बोध प्राप्त होता था। बुद्ध की वाणी में गजब का जादू था। उनके शब्द श्रोता के दिल में उतर जाते थे।

एक युवक प्रतिदिन बुद्ध का प्रवचन सुनता था। एक दिन जब प्रवचन समाप्त हो गए, तो वह बुद्ध के पास गया और बोला, 'महाराज! मैं काफी दिनों से आपके प्रवचन सुन रहा हूँ, किंतु यहाँ से जाने के बाद मैं अपने गृहस्थ जीवन में वैसा सदाचरण नहीं कर पाता, जैसा यहाँ से सुनकर जाता हूँ। इससे सत्संग के महत्त्व पर शंका भी होने लगती है। बताइए, मैं क्या करूँ?'

बुद्ध ने युवक को बाँस की एक टोकरी देते हुए उसमें पानी भरकर लाने के लिए कहा। युवक टोकरी में जल भरने में असफल रहा। बुद्ध ने यह कार्य निरंतर जारी रखने के लिए कहा। युवक प्रतिदिन टोकरी में जल भरने का प्रयास करता, किंतु सफल नहीं हो पाता। कुछ दिनों बाद बुद्ध ने उससे पूछा, इतने दिनों से टोकरी में लगातार जल डालने से क्या टोकरी में कोई फर्क नजर आया?

युवक बोला, एक फर्क जरूर नजर आया है। पहले टोकरी के साथ मिट्टी जमा होती थी, अब वह साफ दिखाई देती है। कोई गंदगी नहीं दिखाई देती है और इसके छेद पहले जितने बड़े नहीं रह गए, वे बहुत छोटे हो गए हैं।

तब बुद्ध ने उसे समझाया, यदि इसी तरह उसे पानी में निरंतर डालते रहोगे तो कुछ ही दिनों में ये छेद फूलकर बंद हो जाएँगे और टोकरी में पानी भर पाओगे। इसी प्रकार जो निरंतर सत्संग करते हैं, उनका मन एक दिन अवश्य निर्मल हो जाता है, अवगुणों के छिद्र भरने लगते हैं और गुणों का जल भरने लगता है।'

युवक ने बुद्ध से अपनी समस्या का समाधान पा लिया। निरंतर सत्संग से दुर्जन भी सज्जन हो जाते हैं, क्योंकि महापुरुषों की पवित्र वाणी उनके मानसिक विकारों को दूर कर उनमें सद्विचारों का आलोक प्रसारित कर देती है।

अनागरिक धम्मपाल और स्वामी विवेकानंद

बोधिसत्व अनागरिक धम्मपाल के साथ ही अपने मित्र स्वामी विवेकानंद शिकागो धर्म संसद में गये और भाषण का अवसर दिया था।

अनागरिक धम्मपाल जी – जिन्होंने भारत में बुद्ध के नाम, उनसे जुड़े स्थलों व बुद्धवाणी को पुनर्जीवित किया और एशिया, यूरोप व अमेरिका तक पहुंचाया।

उनका जन्म 17 सितंबर 1864 को कोलंबो के एक बहुत अमीर ईसाई परिवार में हुआ था। नाम था डेविड हेवावितरणे. डेविड थियोसॉफिकल सोसायटी के संस्थापक मैडम मैरी व कर्नल हेनरी के संपर्क में आए जो बुद्ध धम्म के विद्वान थे। युवावस्था में ही डेविड बुद्ध की शिक्षाओं से काफी प्रभावित हुए और पालि भाषा सीखी। तब अपना नाम अनागरिक धम्मपाल रखा। अनागरिक अर्थात अब किसी समुदाय या नगर के नागरिक नहीं. सामाजिक बंधनों से मुक्त व्यक्ति, सांसारिक आसक्ति नहीं।

सर एरनोल्ड की बुक 'द लाइट ऑफ एशिया' पढी तो मानो उन्हें बुद्धभूमि भारत ने बुला ही लिया। 1891 में बोधगया आए। यहां महाबोधि विहार पर पुरोहितों का कब्जा व कर्मकांड देखकर काफी दुखी हुए। इसी तरह कुशीनगर व सारनाथ की दुर्दशा देखी। फिर तय किया कि भारत में बुद्ध की वाणी को फिर से आगाज करेंगे। महाबोधि सोसाइटी की स्थापना की, जिसका ऑफिस कोलंबो से कोलकता लाए। पूरी दुनिया को भारत के बौद्ध स्थलों की दुर्दशा से अवगत कराया। आखिर उन्हीं के प्रयासों से बौद्धों का महाबोधि विहार में प्रवेश शुरू हुआ।

1893 में शिकागो में हुए विश्व धर्म संसद में बौद्ध प्रतिनिधि के रूप में भारत से अनागरिक धर्मपाल को आमंत्रित किया गया था। स्वामी विवेकानंद को अधिकृत निमंत्रण नहीं था उन दिनों स्वामी विवेकानंद कोलकाता में अनागरिक धम्मपाल के संपर्क में थे। मित्र थे इसलिए अनागरिक धम्मपाल ने आयोजकों से निवेदन पर अपने भाषण के समय में से तीन मिनट का समय स्वामी विवेकानंद को बोलने के लिए दिया गया।

धर्म संसद में अनागरिक धम्मपाल ने बौद्ध दर्शन पर दिए भाषण से धर्म संसद में आए दुनिया के विभिन्न धर्मों के विद्वान अचंभित रह गए और बुद्ध की शिक्षाओं व भारतभूमि से बहुत प्रभावित हुए। स्वामी विवेकानंद का हिंदू दर्शन पर भाषण हुआ।

भारत में बुद्ध धम्म को फिर से जीवित करने वाले इस महामानव ने 13 जुलाई 1931 को बौद्ध भिक्षु के रूप में प्रव्रज्या ली और भिक्षु देवमित्र धम्मपाल कहलाए।

लगातार चालीस वर्ष तक भारत, यूरोप व अमेरिका में करुणा व मैत्री के धम्म का प्रचार किया। 29 अप्रैल 1933 को परिनिर्वाण हुआ। उनके अस्थि अवशेष सारनाथ के मूलगंध कुटी विहार में सुरक्षित है। ऐसे बोधिसत्व को बार-बार नमन। उन्हीं की गौरव स्मृति में पूरी दुनिया में पालि गौरव दिवस मनाया जाता है।

आलेख : डॉ एम एल परिहार, जयपुर
भवतु सब्बं मंगलं ..
सबका कल्याण हो..सभी प्राणी सुखी हो।

आस्था

एक बड़ी प्रसिद्ध कहानी है अरब में कि ईश्वर ने तो बडी घोषणाएं की हैं संसार में कि मैं हूंकुरान है, बाइबिल है, वेद हैं, उपनिषद हैं, गीता है, जहां ईश्वर घोषणा करता है मामेकं शरणं व्रज, मेरी शरण आ, मैं हूं। कहानी कहती है, लेकिन शैतान ने अब तक एक भी शास्त्र नहीं लिखा और घोषणा नहीं की। अजीब बात है! क्या शैतान को विज्ञापनबाजी का कुछ भी पता नहीं? क्या शैतान को विज्ञापन के शास्त्र का कोई अनुभव नहीं? ईश्वर के तो कितने मंदिर, कितनी मस्जिदें, कितने गुरुद्वारे, कितने चर्च खडे हैं। घंटियां बजती ही रहती हैं, विज्ञापन होता ही रहता है कि ईश्वर है। शैतान बिलकुल चुप है।

किसी ने शैतान से पूछा है कहानी में। उसने कहा कि हम जानते हैं। मेरी सारी खूबी इसी में है कि लोग मेरी अवहेलना करें। लोगों को पता न हो कि मैं हूं, तो मेरा काम सुविधा से चलता है। मैं उनकी बेहोशी में ही घात मारता हूं। उन्हें पता चल जाए कि मैं हूं, तो वे सजग हो जाएंगे। मेरा न होना ही मेरे लिए सुविधापूर्ण है। शैतान ने कहा, वस्तुत: मैंने अपने कुछ शागिर्द छोड रखे हैं, जो खबर फैलाते रहते हैं कि शैतान वगैरह कुछ भी नहीं। है ही नहीं। यह सब खयाल है। मन का भ्रम है। आदमी का भय है। शैतान है नहीं। लोग निश्चिंत हो जाते हैं, मुझे सुविधा हो जाती है।

बुद्ध यह कह रहे हैं, 'वह मेरे पास नहीं आएगा ऐसा सोचकर पाप की अवहेलना न करे।'

क्योंकि तब तुम बेहोश हो जाते हो, जब अवहेलना करते हो। तब तुम सो जाते हो। जब तुम्हें पता है कि चोर आएगा ही नहीं, तुम निश्चिंत सो जाते हो। तुम्हारी निश्चिंतता में ही चोर के लिए सुविधा है।

जागे रहो! होश को जगाए रहो! दीए को जलाए रहो! क्योंकि एक-एक बूंद से जैसे घडा भर जाता है ऐसे ही छोटे-छोटे पापों से आदमी के पूरे प्राण भर जाते हैं।

वह मेरे पास नहीं आएगाङ्कऐसा सोचकर पुण्य की अवहेलना न करे। जैसे पानी की बूंद-बूंद गिरने से घडा भर जाता है, वैसे ही धीर थोडा-थोडा संचय करते हुए पुण्य को भर लेता है।'

तो न तो पाप की अवहेलना करे कि मेरे पास नहीं आएगा, न पुण्य की अवहेलना करे कि मेरे पास नहीं आएगा। ऐसे लोग हैं, मैं उन्हें जानता हूं, अगर उनसे कहो वे पूछते हैं, क्या हम शांत हो सकेंगे? मैं उनसे कहता हूं, निश्चित हो सकेंगे वे कहते हैं, हमें भरोसा नहीं! हमें विश्वास नहीं आता कि हम शांत हो सकेंगे। अब उन्होंने एक दीवाल खडी कर ली। अगर तुम्हें भरोसा ही न आए कि तुम शांत हो सकोगे, तो तुम शांत होने की तरफ कदम कैसे उठाओगे? तुमने एक नकारात्मक दृष्टि बना ली। तुमने निषेध का स्वर पकड लिया। थोडे विधायक बनो।

मेरे पास लोग आते हैं, वे कहते हैं, यह तो हमसे हो ही न सकेगा, यह असंभव है। असंभव? तुमने प्रयोग करके भी नहीं देखा है। संभव बनाने की चेष्टा तो करो पहले, हार जाओ तब असंभव कहना। तुमने कभी चेष्टा ही नहीं की, चेष्टा के पहले कहते हो असंभव है, तो असंभव हो जाएगा। तुम्हें तो कम से कम असंभव हो ही जाएगा, तुम्हारी धारणा ही तुम्हें आगे न बढ़ने देगी।

उत्साह चाहिए। भरोसा चाहिए। उल्लास चाहिए। श्रद्धा चाहिए कि हो सकेगा, तो होता है। क्योंकि अगर एक मनुष्य को हो सका, तो तुम्हें क्यों न हो सकेगा? बुद्ध को हो सका, तो तुम्हें क्यों न हो सकेगा?

जो बुद्ध के पास था, ठीक उतना ही लेकर तुम भी पैदा हुए हो। तुम्हारी वीणा में और बुद्ध की वीणा में रत्तीभर का फासला नहीं है। भला तुम्हारे तार ढीले हों, थोडे कसने पडें। या तुम्हारे तार थोडे

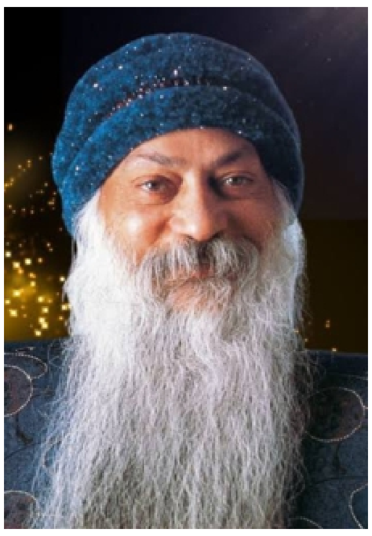

ज्यादा कसे हों, थोडे ढीले करने पडें। या तुम्हारे तार वीणा से अलग पडे हों और उन्हें वीणा पर बिठाना पड?। लेकिन तुम्हारे पास ठीक उतना ही सामान है, उतना ही साज है, जितना बुद्ध के पास। अगर बुद्ध के जीवन में संगीत पैदा हो सका, तुम्हारे जीवन में भी हो सकेगा।

इसी बात का नाम आस्था है।

आस्था का अर्थ यह नहीं है कि तुम भगवान पर भरोसा करो। आस्था का इतना ही अर्थ है कि तुम भरोसा करो कि सुख संभव है, तुम भरोसा करो कि आनंद संभव है, तुम भरोसा करो कि मोक्ष संभव है। बिना प्रयोग किए असंभव मत कहो। अवहेलना मत करो। क्योंकि एक-एक बूंद से फिर घडा भरता है, पुण्य का भी, पाप का भी।

ओशो

पिपली में हुआ पांचवें दलित साहित्य दिवस का आयोजन

2024 में थाइलैंड में होगा अंतर्राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन का आयोजन : डॉ.सुमनाक्षर

जातिगत जनगणना कराए सरकार : डॉ एसपी सुमनाक्षर

गजब हरियाणा /जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र, पिपली स्थित यात्री सूचना एवं सुविधा केंद्र में पांचवें दलित साहित्य दिवस का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ सोहनपाल सुमनाक्षर व विशिष्ट अतिथि के तौर पर राष्ट्रीय महासचिव जय सुमनाक्षर ने शिरकत की। यहां पहुंचने पर आयोजकों की ओर से उनका फूल मालाओं के साथ जोरदार स्वागत किया गया। इस दौरान डॉ सोहनपाल सुमनाक्षर का 84 वाँ जन्मदिन केक कटकर मनाया गया और उनके जन्मदिन को 5वें दलित साहित्य दिवस के रूप मनाया गया। प्रदेशाध्यक्ष गुरदयाल सिंह मोरथला, प्रदेश महामंत्री जरनैल सिंह रंगा, प्रदेश सदस्य मुख्य शाखा प्रबंधक (से.नि.) बी.के भास्कर,कार्यकारी जिला अध्यक्ष गुरप्रीत सिंह, हरबंश सिंह, वीरेंद्र रॉय, अशोक सुनेहड़ी, महीपाल अमीन, नसीब सिंह ने डॉ सोहनपाल सुमनाक्षर को केक खिलाकर बधाई दी। डॉ सोहनपाल सुमनाक्षर ने अकादमी के गठन के 38 वर्ष पूर्ण होने पर बधाई दी। और अकादमी द्वारा दलित साहित्य को जन जन तक पहुंचाने के सफर को सम्मुख रखा। उन्होंने बताया कि आज देश की स्कूल,कॉलेज और विश्वविद्यालयों में जो दलित साहित्य पढ़ाया जाता है वो भारतीय दलित साहित्य की देन है। अकादमी की स्थापना 1984 में तत्कालीन उप निदेशक द्वारा की गई थी। दलितों के साथ अन्याय, असमानता और अमानवीय व्यवहार के अंधेरे को दूर करने के बाबा साहब डॉ. बीआर अंबेडकर के अधूरे सपने को पूरा करने के लिए उप प्रधानमंत्री बाबू जगजीवन राम को धन्यवाद दिया गया और इसकी एकमात्र जिम्मेदारी संस्थापक अध्यक्ष के रूप में उन्हें (डॉ. एसपी सुमनाक्षर) दी गई। बॉक्स डॉ सोहनपाल सुमनाक्षर ने बताया कि अकादमी ने अपनी स्थापना के बाद पिछले 38 वर्षों के दौरान देश के हर कोने में अपनी गतिविधियों का विस्तार किया है। 35 राज्यों में, शाखाएं राज्य से लेकर जिलों, तहसीलों से लेकर ब्लॉक स्तर तक जमीनी स्तर तक फैले नेटवर्क के साथ काम कर रही हैं, जिसमें लगभग पांच लाख रचनात्मक और सक्रिय विचारक, सामाजिक कार्यकर्ता, लेखक, विद्वान, पत्रकार, इतिहासकार शामिल हैं। दलित साहित्य और सार्वजनिक बैठकों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों, सेमिनारों, रैलियों, खेल और लेखन प्रतियोगिताओं, प्रदर्शनियों के माध्यम से देश के दलित जनता, कमजोर वर्गों और उत्पीड़ित लोगों के बीच जागरूकता फैलाने में। डॉ. अम्बेडकर अध्ययन मंडल, पुस्तकालय और वाचनालय, युवा गाइड केंद्र, नुक्कड़ नाटक, नाटक, चर्चाएँ और वाद-विवाद आदि। अकादमी की विभिन्न शाखाओं द्वारा लगभग 30 हजार ऐसे कार्यक्रम आयोजित किए जा चुके हैं।

उन्होंने कहा की दलित जागृति आंदोलन को वैज्ञानिक तरीके से संभालने की योजना बनाई उन्होंने कहा कि अकादमी, जो मूल रूप से एक गैर-राजनीतिक संस्था है, ने मीडिया के माध्यम से लेखकों, कवियों, नाटककारों, पत्रकारों,

उपन्यासकारों, कहानीकारों, साहित्यकारों, सामाजिक कार्यकर्ताओं आदि को मार्गदर्शन प्रदान करके दलित जागृति आंदोलन को वैज्ञानिक तरीके से संभालने की योजना बनाई है। कार्यशाला, सेमिनार, सम्मेलन और बैठकों में विचारों का आदान-प्रदान, चर्चा करना, शोध पत्र लिखना आदि से पहचान मिलती है। और डॉ. अम्बेडकर, महात्मा जोतिबा फुले और भगवान बुद्ध के नाम पर विभिन्न पुरस्कारों से उन्हें सम्मानित किया जाता है।

2024 में थाइलैंड की धरती पर होगा अंतर्राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलनः सुमनाक्षर

डॉ एसपी सुमनाक्षर ने बताया की अकादमी की ओर से विदेश की धरती पर भी अंतर्राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन आयोजित किए जा चुके हैं। और 2024 में थाइलैंड में अंतर्राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। जिसमे भारत भर से अकादमी के पदाधिकारी और कार्यकर्ता भाग लेंगे।

2019 में मनाया गया था प्रथम दलित साहित्य दिवसः गुरदयाल सिंह

प्रदेश अध्यक्ष गुरदयाल सिंह मोरथला ने बताया कि 2019 में डॉ सोहनपाल सुमनाक्षर के 89 वें जन्मदिन को पिपली के यूथ हॉस्टल में प्रथम दलित साहित्य दिवस के रूप में मनाया था। जिसमे भारत के विभिन्न राज्यों सहित नेपाल से अकादमी के पदाधिकारियों ने भाग लिया था।

गुरदयाल सिंह प्रदेश अध्यक्ष और गुरप्रीत सिंह बने जिला कार्यकारी अध्यक्ष

अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ सोहनपाल सुमनाक्षर ने पूर्व कृषि अधिकारी गुरदयाल सिंह मोरथला को प्रदेश अध्यक्ष और समाजसेवी गुरप्रीत सिंह को कार्यकारी जिला अध्यक्ष बनाने की घोषणा की।

सभी राज्यों में हो जातिय जनगणनाः डॉ एसपी सुमनाक्षर

अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने भारत सरकार केंद्र व अन्य राज्यों में भी बिहार की तरह जातिगत जनगणना कराने की मांग की है। जातीय जनगणना से सही भारत में एससी/ एसटी/ बीसी के जनसंख्या के सही आंकड़े सामने आ जाएंगे। तब ही जिसकी जितनी संख्या भारी उतनी उसकी हिस्सेदारी मिल सकेगी। सरकार ईमानदारी से जातिय जनगणना कराकर भारत देश के एससी/ एसटी/ बीसी को उनकी हिस्सेदारी दे।

गुरदयाल सिंह मोरथला बने अकादमी के प्रदेश अध्यक्ष
अकादमी राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ सोहनपाल सुमनाक्षर ने की नियुक्ति

गजब हरियाणा /जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र, भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ सोहनपाल सुमनाक्षर ने पूर्व कृषि अधिकारी गुरदयाल सिंह मोरथला को हरियाणा प्रांत का प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया है। उनकी नियुक्ति पर प्रदेश महामंत्री जरनैल रंगा, सदस्य बीके भास्कर, जिला अध्यक्ष गुरप्रीत सिंह, महीपाल, अशोक सुनेहड़ी, वीरेंद्र रॉय, हरबंस सिंह, नसीब सिंह ने फूल मालाएं पहनाकर बधाई दी।

डॉ सोहनपाल सुमनाक्षर ने कहा की गुरदयाल सिंह पिछले 25 - 30 वर्षों से अकादमी से जुड़ा हुआ है। जो प्रदेश के संगठन सचिव, प्रदेश सचिव और प्रदेश उपाध्यक्ष के पदों पर रह कर दलितोत्थान के कार्यों में अपनी सेवाएं दे चुका है। उन्होंने कहा की गुरदयाल सिंह के नेतृत्व में अकादमी हरियाणा में समाज के गरीब, असहाय,लाचार, कमजोर, दबे कुचले लोगों और दलित साहित्य के प्रति जन जागरण अभियान और जोर शोर से चलाएंगे। नवनियुक्त प्रदेशाध्यक्ष गुरदयाल सिंह मोरथला ने राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ सोहनपाल सुमनाक्षर और राष्ट्रीय महासचिव जय सुमनाक्षर का आभार जताते हुए कहा की डॉ सुमनाक्षर ने उन्हें हरियाणा प्रदेश की जो अहम जिम्मेवारी सौंपी है उसे निभाने की कोशिश करेंगे और हरियाणा में अकादमी का विस्तार करेंगे, राष्ट्रीय अध्यक्ष की उम्मीद को कायम रखेंगे।

गुरप्रीत सिंह अकादमी के जिला कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त

गजब हरियाणा /जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र, भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष की मौजूदगी में प्रदेश अध्यक्ष गुरदयाल सिंह मोरथला और प्रदेश महामंत्री जरनैल सिंह रंगा और प्रदेश कार्यकारणी सदस्य बी.के भास्कर ने समाजसेवी गुरप्रीत सिंह को कार्यकारी जिला अध्यक्ष की जिम्मेवारी सौंपी है। उनकी नियुक्ति पर वीरेंद्र रॉय, दयानंद खींची, रविंद्र कुमार, निर्मल सिंह ने बधाई दी।

बता दें गुरप्रीत सिंह पहले भी अकादमी के जिला अध्यक्ष के पद पर रह चुके हैं, एक बार दोबारा उन्हें यह जिम्मेवारी सौंपी गई और जिला कार्यकारणी का गठन करने की उम्मीद जताई।

गुरप्रीत सिंह ने कहा की उन्हें अकादमी के पदाधिकारियों द्वारा जो जिम्मेवारी सौंपी है उसे बखूबी निभाएंगे और जिला कार्यकारणी का गठन करेंगे।

GAJAB HARYANA NEWSPAPER

मारकंडा नेशनल कॉलेज शाहबाद में मेरी माटी-मेरा देश कार्यक्रम के तहत निकाली कलश यात्रा

गजब हरियाणा /जरनैल रंगा

शाहबाद, मारकंडा नेशनल कॉलेज के सभागार वीरवार को मेरी माटी मेरा देश कार्यक्रम के अंतर्गत कलश यात्रा निकाली गई। यह कार्यक्रम नेहरू युवा केंद्र कुरुक्षेत्र युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार व जिला प्रशासन कुरुक्षेत्र के संयुक्त तत्वाधान में करवाया गया। कार्यक्रम में शुगरफैड के चेयरमैन एवं विधायक रामकरण ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की, जबकि ब्लॉक समिति चेयरमैन तरसेम सिंह और जिला परिषद सदस्य कंवरपाल वशिष्ठ अतिथि के रूप में पधारे।

सर्वप्रथम कार्यक्रम आयोजक नेहरू युवा केंद्र कुरुक्षेत्र की जिला युवा अधिकारी रेनू रानी, लेखा एवं कार्यक्रम सुपरवाइजर कांता देवी, मारकंडा नेशनल कॉलेज की प्राचार्य मंजू गुप्ता और प्रोफेसर डॉ. शालिनी शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया और उसके बाद उक्त कार्यक्रम के महत्व की विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम सुपरवाइजर कांता देवी ने बताया कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य माटी को नमन और वीरों को वंदन करना है। मुख्य अतिथि रामकरण ने अपने संबोधन में कहा कि आजादी अमृत महोत्सव के समापन कार्यक्रम के तहत मेरी माटी मेरा देश कार्यक्रम का देश भर में आयोजन किया जा रहा है। उन्होने बताया कि अमृत कलश यात्रा का उद्देश्य उन वीर जवानों का सम्मान करने से है जिन्होंने देश के लिए अपना बलिदान दिया है और इस अभियान में वीरों को याद करने के लिए देशभर में विभिन्न कार्यक्रम करवाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि शहीदों की बदौलत ही हमारी आजादी कायम है और समाज के सभी लोगों और युवाओं को वीर शहीदों से प्रेरणा लेनी चाहिए।

कार्यक्रम के अंत में विद्यार्थियों, कॉलेज के अध्यापकों, अधिकारियों, सरपंचों व पंचों को अमृत काल की शपथ

दिलवाई गई और उसके बाद विधायक रामकरण ने कलश यात्रा को रवाना किया। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थी और अध्यापकगण, मारकंडा नेशनल कॉलेज की एनसीसी टीम सदस्य, एनएसएस टीम सदस्य, सीएससी डिस्ट्रिक्ट मैनेजर मोहित शर्मा, बीडीपीओ कार्यालय स्टाफ, जनसंपर्क विभाग की सांस्कृतिक टीम, युवा एवं खेल विकास मंडल के अधिकारी और कर्मचारी, उदारसी कोषाध्यक्ष विजेता सैनी, अमित शर्मा और शुभम राणा सहित जिला प्रशासन के अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित रहे।

लाडवा हल्के की जनता को जनहित के काम करने वाले व्यक्ति को भेजना चाहिए विधानसभा: संदीप गर्ग

कमी सरकार में नहीं प्रतिनिधि में होती है, वह जनता की आवाज कैसे उठाता है

गजब हरियाणा न्यूज

लाडवा । लाडवा हल्के के नेता एवं समाजसेवी संदीप गर्ग ने कहा कि लाडवा हल्के की जनता को ऐसे व्यक्ति को चुनकर इस बार विधानसभा में भेजना चाहिए जो लाडवा हल्के की जनता की आवाज उठा सकें और लोगों को जो समस्याएं आती है उनका समाधान करवा सकें।

लाडवा की संगम मार्केट में दुकानदारों से नेता संदीप गर्ग से मुलाकात की व गर्ग द्वारा किये जा रहे जनहित व समाज हित के कार्यो को लेकर अपना समर्थन दिया। नेता संदीप गर्ग ने कहा कि लाडवा हल्के की जनता की आवाज उठाने के लिए ऐसे व्यक्ति को विधानसभा में भेजना चाहिए जो हल्के की जनता की आवाज को उठा सकें। उन्होंने कहा कि सरकार में कोई कमी नहीं होती, कमी इंसान में होती है। जो अपने स्वार्थ के लिए विधायक तो बन जाता है। परंतु फिर उसके बाद विधानसभा की जनता को भूल जाता है। उन्होंने कहा कि अभी से पहले लाडवा हल्के की जनता ने वोट देकर जितने भी विधायक बनाए हैं, वह केवल विधायक ही बने हैं। उन्होंने हल्के के विकास के लिए कुछ भी नहीं किया। उन्होंने कहा कि आने वाले 2024 के विधानसभा चुनाव में लाडवा विधानसभा से ऐसे प्रतिनिधि को चुनकर विधानसभा में भेजने का काम करें। जो हल्के की जनता के लिए काम कर सके और हल्के को जिले में ही नहीं बल्कि हरियाणा प्रदेश के मानचित्र पर अलग विधानसभा बनाकर दिखा सकें। वहीं दुकानदारों ने समाजसेवी संदीप गर्ग द्वारा किये जा रहे जनहित व समाज हित के कार्यो को लेकर अपना समर्थन दिया और आगामी विधानसभा चुनावों में साथ देने का वायदा किया। मौके पर हरीश अरोड़ा, भगवान दास, संगम, हैप्पी अरोड़ा, सतीश, अनुज गर्ग, मंदीप सिंह, संजय रहेजा, देवेन्द्र, तारा, परदीप, बिट्टा, राजेश, रोमिल चोपड़ा, नरेन्द्र अरोड़ा, रमना आनंद, संजय कुमार आदि मौजूद थे।

जन शिक्षा अधिकार मंच के धरने ने किया 385 वें दिन में प्रवेश

गजब हरियाणा न्यूज

कैथल । जन शिक्षा अधिकार मंच कैथल द्वारा जारी धरना 380 वें दिन धरने की अध्यक्षता आशा नेत्री पुनम व किसान नेता जयपाल फौजी ने संयुक्त रूप से की।

आशा वर्कर यूनियन नेता पुनम ने कहा कि हरियाणा सरकार के मुख्यमंत्री और मंत्री तथा नेता जनसंवाद के नाम पर नौटंकी कर रहे है,जो संगठन सरकार से बातचीत करना चाहते है। उन्हें सरकार नजर अंदाज कर रही है,उनकी जायज मांगे भी सुनी नहीं जा रही। जनसंवाद में जो भी सरकार के खिलाफ बोलता है, उसे ही विरोधी बताकर दबा दिया जाता है,जब अपने खिलाफ कुछ सुनना ही नहीं चाहते है तो फिर ऐसी नौटंकी बंद कर देनी चाहिए। जनसंवाद जनता की भलाई के लिए होने चाहिए और जनता की आवाज सुनी जानी चाहिए तथा जनता की समस्यायों का समाधान भी करना चाहिए। समाधान तो कहीं किया नहीं जा रहा है, उल्टा समस्याएं दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

जन शिक्षा अधिकार मंच के संयोजक जयप्रकाश शास्त्री ने कहा कि हरियाणा के मुख्यमंत्री 14 अक्टूबर को माडल प्राथमिक सरकारी स्कूलों में पढ़ रहे बच्चों के अभिभावकों से संवाद करेंगे, अभी कुछ दिन पूर्व स्कूल प्रबंधन समितियों के सदस्यों से भी बातचीत की गई थी अच्छी बात है कि मुख्यमंत्री अभिभावकों से बात करेंगे लेकिन मुख्यमंत्री मनोहर लाल जी शिक्षक संगठनों से क्यों नहीं बात करते ?।

मंच के प्रैस प्रवक्ता सुरेश द्रविड़ ने कहा कि हरियाणा के मुख्यमंत्री यदि वास्तव में शिक्षा में सुधार करना चाहते है तो सबसे पहले शिक्षक संगठनों के प्रतिनिधियों से गंभीरता से बात करें और बातचीत के साथ साथ समस्याओं का समाधान भी करें, इसके पश्चात शिक्षकों से, फिर छात्रों से, इसके बाद अभिभावकों से,मिड डे मील वर्करों से, स्कूलों के चौकीदारों,स्वीपरों, क्लर्कों से तथा कच्चे कर्मचारियों से और बातचीत के पश्चात इनको पक्का करें अन्यथा इस बातचीत का कोई लाभ नहीं होगा, और इन सबसे बातचीत करने के बाद स्कूल प्रबंधन समितियों के सदस्यों से बात करते तो बेहद अच्छा रहता।

मंच के सहसंयोजक बलबीर सिंह ने कहा कि हरियाणा के मुख्यमंत्री को आशा वर्कर यूनियन तथा आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और मिड डे मील वर्करों से बातचीत करनी चाहिए और उनकी समस्याओं का समाधान करना चाहिए, क्या हरियाणा के मुख्यमंत्री इस ओर ध्यान देंगे ? क्या कमजोर और वंचितों से बातचीत करके लोकतांत्रिक मर्यादाओं का पालन करेंगे, यदि ऐसा करेंगे तो हम उनका स्वागत करेंगे। जन शिक्षा अधिकार मंच कैथल का धरना आज 380 वें दिन में पहुंच गया है, क्या जन शिक्षा अधिकार मंच के साथियों से बात करेंगे। हम उनसे बातचीत का निवेदन भी करते हैं और शिक्षा संबंधी मुद्दों का बातचीत से समाधान चाहते है। दबाव से और राजद्रोह जैसे मुकदमों से मौजूदा सरकार को कुछ भी हासिल होने वाला नहीं है। उन्होंने कहा कि 12 अक्टूबर को गुहला चीका में प्रदर्शन किया गया और स्थानीय विधायक तथा उप मंडल अधिकारी को ज्ञापन भी सौंपा गया। रिटायर्ड कर्मचारी संघ के जिला प्रधान रमेश हरित ने कहा कि हरियाणा के मुख्यमंत्री रिटायर्ड कर्मचारीयों से बात करे और कैशलैस मैडिकल सुविधा को लागू करें, पुरानी पेंशन को बहाल करें। कोरोना काल का 18 महिने का डी ए जारी करें तथा रिटायर्ड कर्मचारीयों की आयु बढ़ने पर पेंशन में बढ़ोतरी भी करें। रिटायर्ड मुख्याध्यापक रामशरण राविश ने कहा कि सुरेश द्रविड़ पर दर्ज एफआईआर को तुरंत रद्द करे तथा बंद किए गए लड़कियों के स्कूलों को दोबारा खोले, स्कूल मर्जर की प्रक्रिया को बंद करें तथा नये स्कूलों को खोले और खाली पड़े पदों पर भर्तीयां करें तभी सरकार का जनसंवाद लाभदायक होगा। धरने पर मंगता पाई, रामशरण राविश, बलवंत जाटान, सुखपाल मलिक खुराना,भीम सिंह तितरम, रणधीर ढुंढ़वा, बलवंत रेतवाल, सतबीर प्यौदा, आभेराम कसान, हजूर सिंह, वीरभान हाबड़ी, कलीराम प्यौदा, रामदिया, मियां सिंह, बलवंत धनोरी आदि उपस्थित थे।

परमात्मा की दो अभिव्यक्तियां साकार भी है और निराकार भी : स्वामी ज्ञाननाथ

हरेक इल्म के साथ अमल का होना बहुत जरूरी, अमल के बिना सच झूठ और झूठ सच लगता है : महामंडलेश्वर

गजब हरियाणा न्यूज/राहुल

अम्बाला । निराकरी जागृति मिशन नारायणगढ के गद्दीनशीन चेयरमैन और संत सुरक्षा मिशन भारत के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर एडवोकेट स्वामी ज्ञाननाथ ने सत्संग के दौरान रूहानी प्रवचनों में कहा कि अगर ज्ञान और विवेक की दृष्टि से देखा जाए तो आप इसी निष्कर्ष पर पहुंचेगे की परमात्मा की दो अभिव्यक्तियां हैं अर्थात् परमात्मा साकार भी है और निराकार भी है। स्वामी जी ने कहा कि सुरत-शब्द योग, ज्योति और श्रुति योग, ज्योति नाद योग का नित्यप्रति अभ्यास, साधना-अराधना किए बिना जीव को अपने निज स्वरूप आत्मा का ज्ञान ध्यान और बोध नही हो सकता। वह परम आनंद और मोक्ष मुक्ति का अधिकारी नही बन सकता और भगवत प्राप्ति एक सपना बनकर रह जाता है। अध्यात्मिक यात्रा वहीं खड़ी रहती है जहां से शुरु की थी। महामण्डलेश्वर स्वामी ज्ञान नाथ जी महाराज ने कहा कि हरेक इल्म के साथ अमल का होना बहुत जरूरी है। अमल के बिना सच झूठ और झूठ सच लगता है। अभागा जीव बाहर की बनावट,सजावट और दिखावट मे उलझ जाता है। बिना संयम और साधना, आत्मा के ज्ञान ध्यान और बोध के बिना सबकुछ व्यर्थ और कोरी कपोल कलपनाएं हैं। स्वामी ज्ञान नाथ ने आहवान किया कि आइए आप निराकारी निराकारी जागृति मिशन से जुड़िए। निराकारी जागृति मिशन मे साधक को पहले परमात्मा की पहचान कराई जाती है फिर पलभर मे परमात्मा का खुली आंखो से दर्शन दीदार करया जाता है और अंतर्मुखी होने की सहज और सटीक युक्ति बताई जाती है। महामंडलेश्वर स्वामी ज्ञान नाथ ने कहा कि आप जितने मर्जी भाषण देते रहो और सुनते रहो, बाहर मुखी कितने भी धार्मिक कृत्य करते रहो, गायन वादन करते रहो, वेदों शास्त्रों, उपनिषदों, पुराणों, महापुराणों और संतों द्वारा लिखी गई वाणी को और वेदों शास्त्रों में लिखी गई ऋचाओं को पढ़कर कंठस्थ भी कर लो, चाहे आप कितने भी विद्वान बन जाओ। ऐसा करने से इंसान वाचक ज्ञानी तो बन सकता है परंतु ब्रह्मज्ञानी नही बन सकता। लोगों को अपने भाषण से कुछ देर के लिए प्रभावित कर सकता है, वाह-वाही प्राप्त कर सकता है, गरीब लोगों द्वारा अथक प्रयास करके कमाया गया पैसा बटोर सकता है, सांसारिक भौतिक सुख वैभव, यश-मान और कीर्ती प्राप्त कर सकता है परंतु वह ब्रह्मज्ञानी नही बन सकता। यहां यह कहना उचित होगा कि हमारे जीवन मे तत्वदर्शी सतगुरु होना बहुत आवश्यक है। एक ऐसा समय का ब्रह्मज्ञानी सद्गुरु जो परमात्मा को तत्व से जानता हो अर्थात जिसने परमात्मा को पहले खुली आंखों से देखा हो और फिर बंद आंखें करके देखा हो। सुरत-शब्द योग का अभ्यास करके ज्योति और श्रुति की योग युक्ति को अपनाकर जिसने अखिल ब्रह्मांड, जड और चेतन मे रसे और बसे हुए एकरस कायम दायम ओत-प्रोत जय श्री प्रियतम निर्गुण निराकार एंव सर्वाधार परमात्मा को अपने अंग संग जान लिया हो और पहचान लिया, जो तरह-तरह के मन और मत-मतांतरों के भेदभाव, जातिवाद, धर्म उन्माद, मजहब, कट्टरवाद, अलगाववाद, बहुदेववाद, संप्रदायवाद को छोड़कर अपने आप मे ब्रह्मनिष्ठ हो गया हो, अपने निज स्वरुप आत्मा मे स्थित हो गया हो, अपने आप मे ठहर गया हो। हमारा सद्गुरु ऐसा होना चाहिए जो हमें जीते जी परमात्मा का आंखों से दर्शन दीदार करा दे।

जो जीते जी प्रभु परमात्मा के हमेशा अंग संग होने का एहसास करा दे। जो योग दृष्टि और अंतर्मुखी दृष्टि से मनुष्य जीवन का सूक्ष्म रूप से आत्म निरीक्षण करने की कला सीख दे। जो आत्मा विश्रांति पद पर पहुंचा दे मानसिक तनाव, ममता और तृष्णा की पकड़ और जकड़ से छुटकारा दिला दे, जो अंतःकरण में दिव्य प्रेम, अटूट श्रद्धा, निरंतर परमार्थ और पुरुषार्थ करने की दिव्य भावना को जागृत कर दे। वास्तव में ऐसा ज्ञानवान महापुरुष ही पूर्ण ब्रह्मज्ञानी सतगुरु होता है। ऐसे सतगुरु की चरण-शरण मे लौकिक और आलौकिक जीवन मंगलमय हो जाता है और ऐसा ज्ञानवान महापुरुष परम आनंद और मोक्ष मुक्ति का अधिकारी हो जाता है।

मीडियाकर्मियों की पेंशन 10 हजार से बढ़ाकर 15 हजार करना बेहद सराहनीय :आनंद

मंत्रीमंडल की बैठक में मीडियाकर्मियों की पेंशन को बढ़ाने के प्रस्ताव को मिली मंजूरी

गजब हरियाणा न्यूज/नरेंद्र धूमसी

करनाल । मुख्यमंत्री के मीडिया कॉर्डिनेटर जगमोहन आनंद ने कहा कि हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल द्वारा मीडियाकर्मियों की पेंशन 10 हजार रुपये से बढ़ाकर 15 हजार रुपये करना बेहद सराहनीय कदम है। मीडियाकर्मियों के हित में यह एक अहम फैसला लिया गया है। उन्होंने समस्त मीडियाकर्मियों की तरफ से मुख्यमंत्री मनोहर लाल का धन्यवाद किया है।

इस संबंध में जानकारी देते हुए मुख्यमंत्री के मीडिया कॉर्डिनेटर जगमोहन आनंद ने कहा कि हरियाणा के 60 वर्ष से अधिक आयु के मान्यता प्राप्त मीडियाकर्मियों के लिए पेंशन योजना में संशोधन से संबंधित एक प्रस्ताव को कैबिनेट की बैठक में मंजूरी दी गई है। इस निर्णय के बाद राज्य सरकार द्वारा पहले से चलायी जा रही पत्रकार पेंशन योजना के तहत मान्यता प्राप्त मीडिया कर्मियों की पेंशन 10,000 रुपये से बढ़ाकर 15,000 रुपये प्रतिमाह दी जाएगी।

ये है पात्रता

मीडिया कॉर्डिनेटर जगमोहन आनंद ने बताया कि हरियाणा राज्य में वेतन/पारिश्रमिक के आधार पर पत्रकारिता के क्षेत्र में कम से कम 20 वर्षों का अनुभव रखने वाले 60 वर्ष से अधिक आयु के मीडियाकर्मी इस योजना के तहत मासिक पेंशन के हकदार हैं। मीडियाकर्मी को कम से कम पांच वर्षों के लिए सूचना, जनसंपर्क भाषा एवं सांस्कृतिक विभाग, हरियाणा से मान्यता प्राप्त होना चाहिए। किसी अन्य राज्य सरकार या समाचार संगठन से किसी भी प्रकार की पेंशन या मानदेय प्राप्त करने वाला मीडियाकर्मी भी पात्र होगा। हालाँकि, यदि कोई पात्र मीडियाकर्मी हरियाणा राज्य/केंद्र सरकार या किसी अन्य राज्य सरकार/सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम से 15,000/- रुपये प्रति माह से कम राशि की पेंशन प्राप्त कर रहा है, तो इस योजना के तहत पेंशन की पात्रता उक्त संस्थानों से मिलने वाली पेंशन से कम हो जाएगी। योजना के तहत पेंशन प्राप्तकर्ता वृद्धावस्था सम्मान भत्ता प्राप्त करने के लिए अयोग्य होगा।

सफाई कर्मियो को पॉलिसी बनाकर सरकारी कर्मचारी का दर्जा देने काम करे सरकार : चीमा

गजब हरियाणा न्यूज/रविंद्र

पिपली । पंचायत समिति पिपली के चेयरमैन विक्रमजीत सिंह चीमा का कहना है कि प्रदेश सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत सफाई कर्मचारियों को पॉलिसी बनाकर सरकारी कर्मचारी का दर्जा देने काम करे। सफाई कर्मचारियों का वेतन 24 हजार रुपए प्रति माह सरकार निर्धारित करे। जिससे प्रदेश सरकार को फायदा मिलेगा और सफाई कर्मचारी अपने परिवारों का पालन पोषण सही ढंग से कर सकेंगें।

उन्होंने इस bate खंड कार्यालय पिपली में सफाई कर्मचारियों को समर्थन देने के दौरान उनको संबोधित करते हुए कही। चेयरमेन चीमा ने कहा कि सफाई कर्मचारी पूरे गांवों की गली नालियों से गंदगी की सफाई करते है और कचरें को भी घरों से उठाने का काम करते है। ऐसे में सरकार एक पॉलिसी बनाकर सफाई कर्मचारियों की इस अपील का ठोस समाधान करने का काम करे। इस मौके पर ब्लॉक प्रधान रिंकू समानी, उप प्रधान टोनी मसाना, कुलविन्द्र बोढी, जसबीर खानपुर, नरेश कनीपला, गौरव मथाना, रमेश सिरसमा, सुखविन्द्र गादली, राय साहब, राजपाल खैरा सहित अनेंको सफाई कर्मचारी मौजूद थे।

रिटायर होने पर 20 लाख रुपए की आर्थिक सहायता देने की मांग।

सफाई कर्मचारियों ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में 400 की आबादी पर एक सफाई कर्मचारी की भर्ती की जाए। सफाई कर्मचारियों में किसी एक को सुपरवाईजर नियुक्त किया जाए। सफाई कर्मचारी की मृत्यू होने पर उसके परिजनों को नौकरी दी जाए। सफाई कर्मचारी रिटायर होने पर 20 लाख रुपए की आर्थिक सहायता दी जाए। सरकार जल्द ही उनकी इन मांगों पर विचार विमर्श कर लागू करने

बीपीएल परिवारों को मकान मरम्मत के लिए दी जा रही है 80 हजार रुपये की आर्थिक मदद: डीसी

जिला में सभी बीपीएल परिवारों को मिलेगा योजना का लाभ

गजब हरियाणा न्यूज/सुखबीर

यमुनानगर। डीसी कैप्टन मनोज कुमार ने बताया कि हरियाणा अनुसूचित जाति एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग द्वारा सभी बीपीएल परिवारों को डॉ बीआर अम्बेडकर आवास नवीनीकरण योजना के तहत मकान मरम्मत के लिए 80 हजार रुपये की आर्थिक मदद दी जा रही है। उन्होंने बताया कि अभी तक यह लाभ केवल अनुसूचित जाति के बीपीएल परिवारों को ही दिया जा रहा था लेकिन पिछले वर्ष हरियाणा सरकार ने योजना में बदलाव करते हुए इसमें सभी बीपीएल परिवारों को शामिल करने का निर्णय लिया था। उन्होंने बताया कि सरकार ने योजना के तहत लाभार्थियों का दायरा बढ़ाने के साथ साथ योजना के तहत मिलने वाली राशि को भी 50 हजार से बढ़ाकर 80 हजार रुपये किया था।

डीसी ने बताया कि हरियाणा सरकार की यह आवास नवीनीकरण योजना अनुसूचित जाति एवं पिछड़ा वर्ग से संबंधित है तथा बीपीएल सूची में शामिल आवेदकों को इस योजना के लिए पात्र बनाया गया है। उन्होंने उपरोक्त योजना के नियम शर्तों की जानकारी देते हुए बताया कि यदि पहले मकान निर्माण के लिए या अपने समय के निर्मित मकान को बनाए हुए 10 साल या इससे अधिक समय हो गया हो तथा मकान मरम्मत के योग्य हो तभी आप इस योजना का लाभ उठा सकते हैं।

जिला कल्याण अधिकारी शीश पाल माहला ने बताया कि इस योजना का लाभ उठाने के लिए आवेदनकर्ता हरियाणा का स्थाई निवासी होना चाहिए तथा आवेदनकर्ता का नाम बीपीएल सूची में दर्ज होना चाहिए। आवेदनकर्ता को अनुसूचित जाति एवं पिछड़ा वर्ग से संबंधित है तथा बीपीएल सूची में शामिल आवेदकों को बीपीएल परिवार होने का अपना जाति प्रमाण पत्र दिखाना अनिवार्य है। आवेदनकर्ता का अपना घर होना चाहिए। घर कम से कम 10 साल पुराना होना चाहिए। उन्होंने बताया कि प्रार्थी को परिवार आईडी, बीपीएल राशन कार्ड नंबर, राशन पत्रिका, एससी, बीसी जाति प्रमाण पत्र, आधार कार्ड, बैंक खाता संख्या, मोबाइल नंबर, घर के साथ फोटो, बिजली बिल-हाउस रजिस्ट्री-पानी बिल में से कोई भी दो, मकान की मरम्मत पर अनुमानित खर्च का प्रमाण जैसे कागजात जरूरी है।

ऐसे करें आवेदन

आवेदक को सबसे पहले हरियाणाएससी बीसी.जीओवी.इन से फॉर्म डाउनलोड करके उसे भरना है और उसको सरपंच या फिर पार्षद से सत्यापित करवाना होगा। फॉर्म के साथ में ऊपर बताए गए सभी दस्तावेज लगाने अनिवार्य है। उसके बाद ये फॉर्म आपके नजदीकी सीएससी सेंटर से ऑनलाइन करवाना है। ऑनलाइन करवाने के बाद आपको ये फार्म जिले के अनुसूचित जाति एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग में जमा करवाना है। कोई भी गलत जानकारी न भरें। डॉक्यूमेंट की कॉपी साथ लगाएं, जिससे आपके काम में कोई अड़चन न आए।

शाहबाद के प्रत्येक गांव का चौमुखी विकास हो : बाबूराम

कहा : हलके के एक-एक व्यक्ति का मान सम्मान बहाल हो

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र, शाहबाद विधानसभा से वि.स. चुनाव की तैयारी कर रहे समाजसेवी बाबूराम तुषार लूखी ने कहा है कि उनका चुनावी समर में कूदने का मुख्य उद्देश्य शाहबाद हल्के में विकास को पटरी पर लाना और नशे जैसी बुराई को दूर करना है। उनका प्रयास रहेगा कि ज्यादा से ज्यादा युवाओं को जागरूक करके नशे से होने वाली हानियों के बारे में बताया जाए और किस तरीके से नशे जैसी बीमारी को समाज में फैलने से रोका जाए। उन्होंने कहा की शाहबाद के प्रत्येक गांव का चौमुखी विकास हो और हलके के एक-एक व्यक्ति का मान सम्मान बहाल हो। इसी उद्देश्य को सामने रखते हुए वे शाहबाद के लोगों की सेवा करने के लिए सामने आए हैं। उन्होंने शाहबाद के स्टेशन माजरी मोहल्ला के गुरु घर (सतगुरु रविदास) में मत्था टेक कर लोगों से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने लोगों को बताया कि वे नजदीकी गांव लूखी के रहने वाले हैं जो शाहबाद हलके के अंतर्गत आता है। उनका परिवार एक समाजसेवी परिवार है। जो हमेशा सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर आगे रहता है। इसके अलावा वे कुरुक्षेत्र केंद्रीय सहकारी बैंक के दो बार निदेशक के पद पर रहते हुए कर्मचारी व किसानों के हित में काम कर चुके हैं। इतना ही नहीं उनका सहकारी क्षेत्र में लगभग 35 साल का अनुभव है। इन 35 सालों में उन्होंने समाज के हर तबके को नजदीक से देखा है और उनके दुख दर्द को समझा है। उन्होंने बताया कि शाहबाद हल्का उनका अपना हल्का है। इसलिए शाहबाद की जनता भी विवेक से काम करते हुए उस प्रत्याशी का ही चयन करें जो उनके सुख-दुख में साथ खड़ा हो। और जो आसानी से उपलब्ध हो सके। उन्होंने लोगों से उनके समस्याएं भी जानी और कहा कि समय आने पर इन सभी समस्याओं का प्राथमिकता के आधार पर निदान किया जाएगा। उन्होंने लोगों को विश्वास दिलाया कि वे भले ही विधायक ना बने लेकिन वे उसके बावजूद भी लोगों की काम करते रहेंगे। उनका मुख्य उद्देश्य गरीब, जरूरतमंद वह असहाय की मदद करना है। इसी उद्देश्य को सामने रखते हुए वे इस क्षेत्र मे आए हैं। जनसंपर्क अभियान के तहत तुषार ने शाहबाद के बजुर्गों से भी मुलाकात की और उनका आशीर्वाद लिया।

साहेब कांशी राम को किया याद

राजनैतिक के नायक रहे साहब कांशीराम जी : गुरुदेव

गजब हरियाणा न्यूज

कैथल। डॉ भीमराव अम्बेडकर युवा मंच बडसीकरी कलां के डॉ भीमराव अम्बेडकर पुस्तकालय में बहुजन नायक मान्यवर साहब कांशीराम जी के महापरिनिर्वाण दिवस पर पुष्प अर्पित किए गए। जिसमें मुख्य रूप से बसवा टीम से सामाजिक कार्यकर्ता गुरूदेव बडसीकरी व डॉ बी आर अम्बेडकर युवा मंच के प्रधान अभिषेक धानिया उपस्थित रहे। गुरुदेव बडसीकरी ने बताया कि बहुजन नायक मान्यवर साहब कांशीराम जी का जन्म 15 मार्च 1934 में पीर्थीपुर बुंगा ग्राम खवासपुर, रूपनगर जिला पंजाब में रविदासिया परिवार में हुआ था। साहब कांशीराम जी ने बी.एस.सी पास करने के बाद पुणे में विस्फोटक अनुसंधान और विकास प्रयोगशाला में अधिकारी के तौर पर सरकारी नौकरी करने लगें। जब वहां देखा कि एक कर्मचारी डॉ बी आर अम्बेडकर के जन्मदिवस पर छूटी ले रहा हैं, लेकिन उसको छुट्टी नहीं मिल रही तों साहब कांशीराम जी ने जब उस साथी दीनाभाना कर्मचारी से डॉ भीमराव अम्बेडकर जी के बारे में पुछा तो साहब कि आंखों से आंसू नहीं रूके। तब साहब कांशीराम जी ने बाबा साहब के जन्मदिवस पर छुट्टी करवाई और वहां से नौकरी छोड़ दी और 1964 में एक दलित सामाजिक कार्यकर्ता बन गए। साहब कांशी राम जी डा. अम्बेडकर की विचारधारा से प्रभावित होकर उन्होंने रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया का समर्थन किया लेकिन कांग्रेस के साथ जुड़ने से उनका मन भंग हो गया। इसके कारण उन्होंने 1971 में अखिल भारतीय एस.सी, एस.टी, औबीसी व अल्पसंख्यक कर्मचारी संघ की स्थापना की जो बाद में चलकर 1978 में बामसेफ बनी। जिसका उद्देश्य अनुसूचित जातियां अनुसूचित जनजातियां, अंन्य वर्गो व अल्पसंख्यकों के कर्मचारियों के लिए काम करना था। साहब कांशीराम जी ने 1981 में एक और समाजिक संगठन बनाया दलित शोषित समाज संघर्ष समिति डीएस4। उन्होंने दलित वोट को इकट्ठा करने के लिए (बसपा) बहुजन समाज पार्टी का निर्माण 1984 में किया। उन्होंने अपने जीवन में अनेक पुस्तकें लिखी जिसमें सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक 'चम्मचा युग' थी। अभिषेक धानिया ने बताया कि साहब कांशीराम जी ने अपने परिवार को छोड़कर समाज को जगाने के लिए पुरे भारत में साईकिल यात्रा निकाली और लोगों को जागरूक किया लम्बे संघर्ष के बाद साहब बीमार रहने लग गए और 9 अक्टूबर 2006 को बहुजन नायक मान्यवर साहब कांशीराम जी हमारे बीच नहीं रहे। इस अवसर पर पूर्व प्रधान गुरमीत बडसीकरी, दारा राम, मनीष कश्यप, राहुल धानिया आदि मौजूद रहे।

डॉ. एसएस स्वामीनाथन थे हरित क्रांति के जन्मदाता : डॉ. रामभगत

किसानों की हालत सुधारने और उत्पादन बढाने के लिए स्वामीनाथन ने की थी सिफारिशें

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र। अंबेडकर भवन के प्रधान एवं सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी डॉ. रामभगत लांगयान ने कहा कि डॉ. एसएस स्वामीनाथन हरित क्रांति के जनक थे और एक महान देशभक्त भी थे। डॉ. एसएस स्वामीनाथन ने अमेरिका तथा इंग्लेंड से मिलने वाली नौकरी के आमंत्रण को ठुकरा कर देश की खाद्यान्न समस्या को दूर करने के लिए अपने देश में उत्पादन बढाने के लिए काम किया। आज देश खाद्यान्न के मामले में स्वावलंबी है तो उसका सारा श्रेय डॉ. एसएस स्वामीनाथन को जाता है। वे सेक्टर 8 स्थित अंबेडकर भवन में डॉ. एसएस स्वामीनाथन तथा किसान आंदोलन पर आयोजित संगोष्ठी में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने विस्तार से डॉ. एसएस स्वामीनाथन की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वे हरित क्रांति के जनक के साथ साथ किसानों के सबसे बड़े हितैषी थे। उन्होंने किसानों की फसलों का उत्पादन बढाने के लिए नई नई योजनाएं बनाई और किसानों को फायदा मिले, इसके लिए भी उन्होंने काम किया। वे किसानों के एक महान नेता थे, जिन्होंने सरकार के आगे किसानों की मांगों को रखा। उन्होंने स्वामीनाथन आयोग की रिपोर्ट के अंदर किसानों के हित के लिए अनेक प्रावधान किए थे।

संगोष्ठी में डॉ. मदन सिंह ने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि स्वामीनाथन की अध्यक्षता वाली कमेटी में किसानों की हालत सुधारने तथा उत्पादन बढाने के लिए जो सिफारिशें की थी, वे आज तक लागू नहीं हो पाई हैं। प्रदेश में किसानों के लिए भावांतर योजना, किसान बीमा योजना तथा सस्ते ब्याज पर ऋृण देने की सुविधाएं लाभकारी सिद्ध हुई हैं। उन्होंने कहा कि पहले से किसानों की हालत सुधरी है। सरकार ने जो योजनाएं किसानों के हित के लिए लागू की हैं, अगर किसान इन योजनाओं का लाभ उठाए, तो उनका जीवन और भी सुखदायक हो सकता है। संगोष्ठी में अंबेडकर भवन में रहने वाले छात्रावास के विद्यार्थियों ने भी भाग लिया और अपने अपने विचार रखे। संगोष्ठी में टीआर बीबीयान, डा के एल पूनिया, नरेंद्र कुमार, लख्मी चंद रंगा, डा कुलदीप सिंह, राजेंद्र भट्टी उपस्थित रहे।

हरियाणा में दो जगह हुआ चमार रेजिमेंट के भव्य स्मारक का अनावरण

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

हांसी/कैथल। चमारों की वीरता की सबसे बड़ी पहचान चमार रेजिमेंट का भव्य स्मारक हरियाणा के बीड फार्म हाँसी और कैथल गांव हाबड़ी में स्थापित किया गया। चमार रेजिमेंट 1943 से 1946 तक अस्तित्व में रही और उसने दूसरे विश्व युद्ध में कई अहम लड़ाई जीतीं। चमार रेजिमेंट ने सिंगापुर में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की अगुवाई में भारत की आज़ादी के लिए लड़ रही आज़ाद हिन्द फ़ौज पर गोली चलाने से मना कर दिया था और नेताजी के साथ मिलकर स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। नतीजन अंग्रेजों ने चमार रेजिमेंट को भंग कर दिया। लंबे समय से चमार रेजिमेंट को बहाल करने की माँग हो रही है।

एक संयोग ही समझे 1अक्टूबर 1941को महार रेजीमेंट को दोबारा से स्थापित किया गया था और चमार रेजिमेंट मैमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट और सत्यशोधक सत्संग मिशन द्वारा 1अक्टूबर 2023 को दुनिया का पहला चमार रेजिमेंट स्मारक हांसी के गांव बीड़ फार्म में स्थापित कर अनावरण किया जो इतिहास के पन्नो में स्वर्ण अक्षरों में अंकित हो गया। इन दोनों स्मारक अनावरण के कार्यक्रमों में लोगों नेहजारों की संख्या में पहुंचकर अपना समर्थन दिया और इस स्वर्णिम अवसर के गवाह बने।

प्रकाशक, सम्पादक व मुद्रक जरनैल सिंह द्वारा ढिंगरा प्रिंटिंग प्रैस, अग्रसैन चौंक, मोहन नगर, कुरुक्षेत्र से छपवाकर कार्यालय 'गजब हरियाणा' कोठी नं0 890 पी, सैक्टर-4, अर्बन इस्टेट कुरुक्षेत्र जिला कुरुक्षेत्र, हरियाणा से प्रकाशित व मुद्रक किया। सम्पादक जरनैल सिंह (91382-03233) Registration Namber: HAR/HIN/2018/77311